वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ - 28

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

जुलाई (16-31), 2024

हिन्दू विश्व

न्यायालय का चला हथौड़ा

धर्मांतरण चलता रहा तो हिन्दू अल्पसँख्यक हो जाएगा

- इलाहाबाद उच्च न्यायालय

मुम्बई में सामाजिक समरसता अभियान की अ.भा. बैठक को संबोधित करते विहिप महामंत्री श्री बजरंग लाल बागड़ा जी तथा मंचस्थ उपस्थित सह संगठन महामंत्री श्री विनायकराव देशपाण्डे व सामाजिक समरसता प्रमुख श्री देवजी भाई रावत

न्यूजीलैण्ड। हिंदू हेरिटेज सेंटर रोटोरुआ में 10वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस सम्पन्न

दक्षिण बिहार के अनेक जिलों में विश्व हिन्दू परिषद–बजरंग दल द्वारा सेवा सप्ताह चलाया गया जिसके अंतर्गत मेडिकल कैम्प, मंदिर सफाई व वृक्षारोपण जैसे कार्यक्रम किए गए।

भोपाल में हिन्दू विरोधी राहुल गाँधी द्वारा हिन्दू धर्म को हिंसक, नफरती, झूठ बोलने वाला कहने के विरोध में विहिप बजरंग दल एवं समस्त हिन्दू समाज द्वारा पुतला दहन व प्रदर्शन

अशोकनगर में बजरंग दल द्वारा हिंदू धर्म का अपमान करने और हिंदुओं को हिंसक बताने के विरोध में गाँधी पार्क पर राहुल गाँधी का पुतला दहन किया गया।

हिन्दू विश्व
राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

हे अश्विनीकुमारों! आपके निमित्त यह घर्म (गर्म या ऊर्जा उत्पादक- यज्ञ अथवा सोम) स्तोत्रों (मंत्रशक्ति) द्वारा सिंचित (परिपुष्ट) किया जा रहा है। हे बल-सम्पन्न देवों! यही वह मधुर सोम है, जिससे आप वृत्र को देख (पहचान) लेते हैं। जिस शक्ति से आप दोनों ने औषधियों, विशाल वृक्षों तथा जल को रक्षित किया, उसी बल से हमारी भी रक्षा करें।
- ऋग्वेद

16-31 जुलाई, 2024
आषाढ़ शुक्ल - श्रावण कृष्ण पक्ष
पिंगल संवत्सर
वि. सं. - 2081, युगाब्द- 5126

सम्पादक
विजय शंकर तिवारी

सह सम्पादक
मुरारी शरण शुक्ल
मो. - 7217685539

परामर्शदाता
सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा,
धर्मनारायण शर्मा, विजय कुमार,
रवि पराशर

व्यवस्थापक
श्री दूधनाथ शुक्ल
मो. - 09582555152

सज्जा
श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम, प्रभाग - 6
रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110022-05
दूरभाष : 09582555152

011-26178992, 011-26103495
hinduvishwa@gmail.com

- : मूल्य :-

विदेशों के लिए	$ 75 USD
वार्षिक डाक व्यय सहित	
एक प्रति	15/-
वार्षिक	300/-
त्रिवर्षीय	750/-
पंचवर्षीय	1,200/-
दसवर्षीय	2,250/-
पन्द्रह वर्षीय	3,100/-

वैधानिक सूचना

- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

@eHinduVishwa
@eHinduVishwa
@eHinduVishwa
कुल पेज - 28

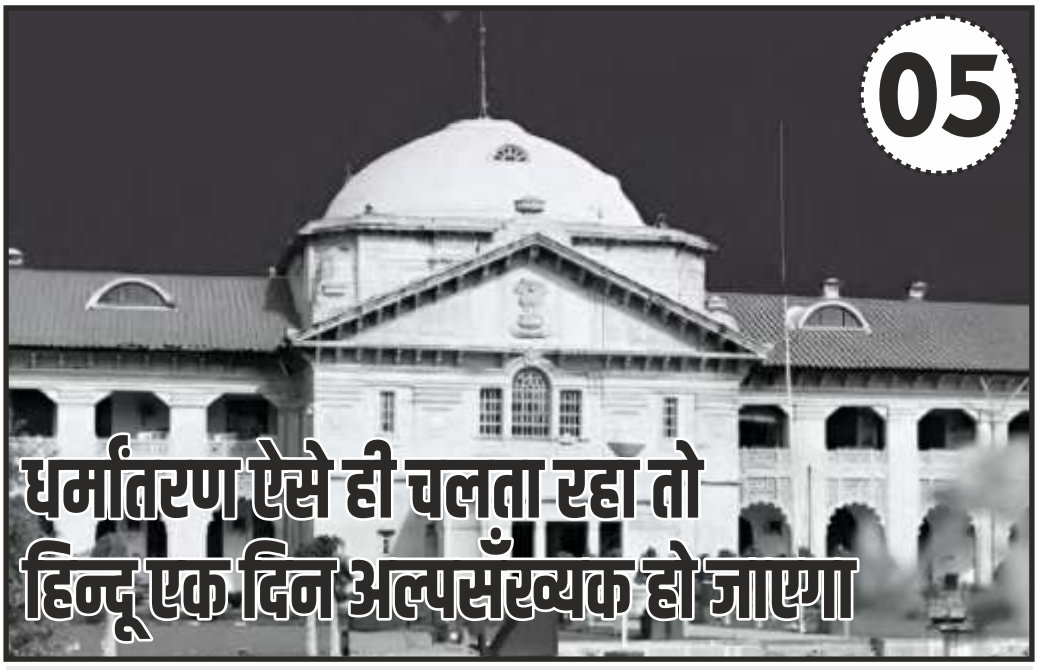

क्या राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एससी, एसटी और अन्य आदिवासी समुदायों के खिलाफ है	08
नालंदा विश्वविद्यालय के पुनरूत्थान के मायने	11
संसद में शरीयत के विचार को पोषित कर संविधान पर प्रहार किया जा रहा है	13
अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर को लेकर इतना हो-हल्ला क्यों	14
श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में वर्षाकाल के दौरान छत से पानी टपकने के तथ्य	16
राजमाता नायकी देवी गौरव दिवस समारोह	17
रक्षा सूत्र (कलावा) का महत्व अध्यात्म से विज्ञान तक	19
नाभि खिसकना	21
हिंदू हेरिटेज सेंटर रोटोरुआ में दसवां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस सम्पन्न	22
भारत को विश्व गुरु बनाना है : अरुण नेटके	23
न्यूजीलैंड के हिंदू समुदाय को उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया	24
धर्मांतरण पर चिंतित क्यों हुआ इलाहाबाद हाईकोर्ट	25
'वात्सल्य वाटिका' में मनाया गया अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस	26

सुभाषित

सम्पूर्ण कुंभो न करोति शब्दं अर्धोघटो घोषमुपैति नूनम्।
विद्वान कुलीनो न करोति गर्वं गुणैर्विहीना बहु जल्पयंति।।

जिस प्रकार से आधा भरा हुआ घड़ा अधिक आवाज करता है, पर पूरा भरा हुआ घड़ा जरा भी आवाज नहीं करता, उसी प्रकार से विद्वान अपनी विद्वता पर घमण्ड नहीं करते, जबकि गुणविहीन लोग स्वयं को गुणी सिद्ध करने में लगे रहते हैं।

सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

राहुल गाँधी का यह हिन्दूद्रोह क्षमा योग्य नहीं

हिंदू हिंसक है, नफरत फैलाने वाला है और असत्य का पक्षधर है। यह कहना है राहुल गाँधी का। उन्होंने लोकसभा में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद ज्ञापन के सत्र में बोलते हुए कहा कि जो लोग अपने आपको हिन्दू मानते हैं, वो चौबीस घंटे हिंसा, नफरत और असत्य का आचरण करते हैं। राहुल गाँधी ने यह अनायास ही नहीं कहा है, यह राहुल का सुविचारित और पूर्व नियोजित बयान है। यह बयान जान–बूझकर संसद में दिया गया है, जिससे बाहर उस पर केस दर्ज न हो पाए। संसद में सांसदों के विशेषाधिकार के कारण बचाव का रास्ता जानकर यह बयान दिया गया है।

अपने वोट बैंक को खुश करने की ओछी नियत से यह बयान दिया गया है। काँग्रेस के हिन्दू विरोधी मानसिकता के तर्ज पर यह बयान दिया गया है। काँग्रेस लम्बे समय से हिन्दू आतंकवाद का नैरेटिव चलाने की कोशिश कर रही है। मुम्बई में आतंकी आक्रमणों के समय भी काँग्रेस हिन्दू आतंकवाद का राग अलाप रही थी। हिन्दू समाज को आतंकी घोषित करने के लिए आतंकियों को हाथ में कलावा बंधवा कर भेजा गया था और काँग्रेस इस ताक में बैठी थी कि इन आतंकियों को हिन्दू आतंकी घोषित कर दिया जाएगा। लेकिन मुम्बई पुलिस के तुकाराम ओम्बले ने अपनी जान पर खेलकर इनका खेल बिगाड़ दिया और कसाब जिन्दा पकड़ा गया। सभी आतंकी पाकिस्तानी थे और हिन्दू आतंकवाद की संकल्पना को सिद्ध करने के लिए कलावा बांध कर आए थे।

काँग्रेस तब भी रुकी नहीं, काँग्रेसियों ने मुम्बई आतंकी हमले में हिन्दू आतंकवाद के पहलू को दर्शाते हुए एक पुस्तक लिखवा लिया, उसका लोकार्पण काँग्रेस के बड़े नेता दिग्विजय सिंह ने किया। उसके बाद समाचार चैनलों की बहस में काँग्रेसी लम्बे समय तक लगातार हिन्दू आतंकवाद की बकवास करते रहे, इस विषय पर लेख लिखते, लिखवाते रहे। इतना ही नहीं काँग्रेस और उसके सहयोगी दल और गिरोह हिन्दू पर्व–त्योहार, मेले, तीर्थ, मन्दिर, रीति, परम्परा पर सदा हमलावर रहे। हिंदुओं के विरोध में ऐसे धंसे कि ये आये दिन देशद्रोह करने लग गए, शायद इन्होंने यह सब जानबूझकर किया।

उसी कड़ी को आगे बढ़ाया है राहुल गाँधी ने। राहुल गाँधी केवल प्रतिपक्ष के नेता नहीं, तो हिन्दू विरोधी कुनबे के नेता भी बन बैठे हैं। यह बानगी उनकी तथाकथित भारत जोड़ो यात्रा, यथार्थ में यह हिन्दू द्रोहियों को जोड़ने की यात्रा थी, में भी दिखी। उनका यह हिन्दूद्रोही संगठन संकलन लोकसभा चुनाव के समय भी दिखाई दिया। इंडी गठबंधन का निर्माण ही जैसे हिन्दूद्रोह के लिए हुआ था। इंडी गठबंधन की पहली बैठक से ही इनका हिन्दू विरोधी एजेंडा साफ दिखाई दे रहा था। डीएमके के नेताओं ने उदयनिधि स्टालिन के नेतृत्व में हिन्दू द्वेष दिखाया, तो काँग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और उनके पुत्र प्रियंक खड़गे भी पीछे नहीं रहे। काँग्रेसियों ने हिन्दू समाज के विरुद्ध भरपूर विषवमन किया है, राहुल गाँधी ने आडवाणी जी के रामजन्मभूमि आंदोलन के विफल होने की बात कहकर हिन्दू समाज को उसके संघर्षों के लिए यशरहित करने का प्रयत्न किया। यदि गलती से बात कह गए होते, तो क्षमा भी मांग सकते थे, लेकिन यह भूल नहीं थी, यह पूर्व नियोजित बयान था, जो हिन्दू समाज को बदनाम करने की नियत से दिया गया था।

हिन्दू समाज को इसका प्रबल प्रतिकार करना आवश्यक है। काँग्रेस में कार्यरत हिन्दू नेताओं को यह विचार करना चाहिए कि क्या वो भी हिंसक, नफरत की मानसिकता वाले और असत्यवादी हैं? ऐसे लांक्षणों के बाद उनका काँग्रेस में बने रहना चाटुकारिता और अवसरवादिता ही कही जाएगी। हिन्दू समाज की सदियों पुरानी सनातन छवि पर यह आक्रमण क्षमा के योग्य भी नहीं है।

इंडी गठबंधन का निर्माण ही जैसे हिन्दूद्रोह के लिए हुआ था। डीएमके के नेताओं ने उदयनिधि स्टालिन के नेतृत्व में हिन्दू द्वेष दिखाया, तो काँग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और उनके पुत्र प्रियंक खड़गे भी पीछे नहीं रहे। काँग्रेसियों ने हिन्दू समाज के विरुद्ध भरपूर विषवमन किया है, राहुल गाँधी ने आडवाणी जी के रामजन्मभूमि आंदोलन के विफल होने की बात कहकर हिन्दू समाज को उसके संघर्षों के लिए यशरहित करने का प्रयत्न किया। यदि गलती से बात कह गए होते, तो क्षमा भी मांग सकते थे, लेकिन यह भूल नहीं थी, यह पूर्व नियोजित बयान था, जो हिन्दू समाज को बदनाम करने की नियत से दिया गया था।

धर्मांतरण ऐसे ही चलता रहा तो हिन्दू एक दिन अल्पसँख्यक हो जाएगा

मुरारी शरण शुक्ल
(सह सम्पादक हिन्दू विश्व)

प्रयागराज उच्च न्यायालय ने अपने एक निर्णय में कहा है कि यदि धर्मांतरण की गतिविधी को जारी रहने दिया गया, तो बहुसँख्यक आबादी एक दिन अल्पसँख्यक हो जाएगी। ऐसे धार्मिक समागमों को रोका जाना चाहिए, जहाँ धर्मांतरण हो रहा है और लोगों का मत परिवर्तन हो रहा है।

पैसे का खेल

राज्य की ओर से उच्च न्यायालय में पेश अतिरिक्त महाधिवक्ता ने अपना पक्ष रखते हुए कहा कि ऐसी सभा आयोजित करके इनलोगों द्वारा बड़ी सँख्या में लोगों को ईसाई बनाया जा रहा है, जिन्हें भारी मात्रा में पैसा मुहैया कराया जा रहा है।

क्या था मुकदमा?

उत्तरप्रदेश के हमीरपुर में दर्ज एफआईआर में शिकायतकर्ता रामकली प्रजापति के भाई रामफल को आरोपी कैलाश हमीरपुर से दिल्ली आयोजित सामाजिक समारोह में भाग लेने के लिए ले गया था। मौदहा गाँव के कई अन्य लोगों को भी सामाजिक समारोह में ले जाया गया और उनका धर्म परिवर्तन कर उन्हें ईसाई बना दिया गया। आरोपी कैलाश ने रामकली से वादा किया था कि उसके मानसिक रूप से बिमार भाई का इलाज कराया जाएगा और एक सप्ताह के भीतर उसे उसके पैतृक गाँव वापस भेज दिया जाएगा। जब शिकायतकर्ता रामकली का भाई एक सप्ताह के बाद वापस नहीं लौटा, तो उसने आरोपी कैलाश से पुछा कि उसका भाई वापस क्यों नहीं आया है। इसका उसे कोई संतोषजनक जबाब नहीं मिला। दिल्ली में सोनू पॉस्टर ऐसी चंगाई सभा कर रहा था, यह भी प्रकाश में आया।

न्यायालय का निर्णय

न्यायालय ने निर्णय में कहा कि प्रचार शब्द का अर्थ है बढ़ावा देना, लेकिन इसका मतलब किसी व्यक्ति को उसके धर्म से दूसरे धर्म में परिवर्तित करना नहीं है। इस मामले में आरोपी कैलाश के खिलाफ मुखबिर रामकली ने गम्भीर आरोप लगाए हैं कि उसके भाई को गाँव से दूर दिल्ली में आयोजित कल्याण सभा में भाग लेने के लिए ले जाया गया था और उसके साथ गाँव के कई लोगों को भी वहाँ ले जाया गया था और उन्हें ईसाई बनाया जा रहा था। रामकली का भाई कभी गाँव नहीं लौटा। न्यायालय ने कहा कि कई अन्य व्यक्तियों के दर्ज किए गए बयानों से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि आरोपी कैलाश लोगों को दिल्ली में आयोजित धार्मिक सभा में भाग लेने के लिए ले जा रहा था, जहाँ उन्हें ईसाई बनाया जा रहा था।

चंगाई सभा क्या है?

आजकल चंगाई सभा– हीलिंग मीटिंग बहुत चर्चा में है, इसको यीशु चंगाई सभा या हीलिंग मीटिंग भी कहा जाता है। यीशु समर्थक या मैथोडिस्ट चर्च इस तरह की सभाएँ आयोजित करता है। उन लोगों का दावा हैं कि इसमें रोगी को ठीक किया जाता है, हालाँकि मेडिकल साइंस इस बात को नहीं मानता है और बहुत सी जगह चंगाई सभा पर हो रहे

गोरख धंधों का भी भांडा फूटा है। चंगाई सभाएँ ईसाई धर्म के प्रचार के लिए हो रही हैं। ये 100 प्रतिशत अंधश्रद्धा फैलाती हैं। अतः तुरंत बंद होनी चाहिए।

इन सभाओं में ईसाई बन चुके लोग नकली रोगी की नकल कर के अभिनय करते हैं और पादरी झूठा उपचार करता दिखाई देता है, जिससे लोग ठीक हो जाने का अभिनय करते हुए ठीक हो जाते हैं। पादरी उपचार भी जादू–टोने की तरह करता है। अंधविश्वास फैलाने का कुकृत्य करता है और फिर कहता है कि देखो ईसा मसीह ने इन सब को ठीक कर दिया। जो लोग सीधे हैं, संदेह नहीं करते, छानबीन नहीं करते, उनको ऐसी नौटंकियों से ये आसानी से बरगला लेते हैं और झांसे में डालकर ईसाई बना लेते हैं। चंगाई सभाएँ अब यूरोप में होती नहीं, क्योंकि वहाँ लोग सवाल पुछने लगते हैं। ये सभाएँ भारत के लगभग सभी राज्यों में कराई जाती हैं। इन्हीं सभाओं को इनके पादरी कल्याण सभा, सामाजिक सभा या धार्मिक सभा कहा करते हैं। यह धर्म परिवर्तन का एक घृणित जरिया है। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने इन सभाओं पर रोक लगाया है। ऐसा ही रोक पुरे देश में लगना चाहिए।

क्या पहली बार हुआ है ऐसा?

ईसाई मिशनरियाँ लगातार हिन्दूओं का धर्म परिवर्तन करा रही हैं। हिन्दू समाज की गरीबी का लाभ उठाकर, उन्हें प्रलोभन देकर, ठग–फुसलाकर ईसाई बनाया जाता है। अँग्रेजों के शासनकाल में मिशनरीज बड़ी सँख्या में भारत आए, देश के कोने–कोने में चर्च बन गए, अनाथाश्रम, बालगृह, विद्यालय, छात्रावास, अस्पताल बनने लग गए। सेवा का स्वांग रचकर अनेकविध धर्मांतरण करने लग गए।

बंगाल में ईसाई धर्मांतरण

बंगाल में ईसाई धर्म १६वीं शताब्दी में आया। पुर्तगालियों ने १६ वीं शताब्दी में हुगली जिले के बंडेल में एक बस्ती की स्थापना की, और बंडेल चर्च, शायद पश्चिम बंगाल का पहला चर्च, १५६६ में बनाया गया था। १६३२ में हुगली की बर्खास्तगी के दौरान जला दिया गया, १६६० में चर्च का पुनर्निर्माण किया गया।

ईसाई धर्म के अनुयायी मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल के बर्धमान, बांकुरा, कोलकाता और हुगली जिले में बसे थे। कई बंगाली कैथोलिकों के पुर्तगाली उपनाम हैं। ब्रिटिश मिशनरी विलियम कैरी, जिन्होंने बैपटिस्ट मिशनरी सोसाइटी की स्थापना की, ने १७९३ में भारत की यात्रा की और सेरामपुर के डेनिश उपनिवेश में एक मिशनरी के रूप में काम किया, क्योंकि ईस्ट इंडिया कंपनी ने उनके क्षेत्रों में उनकी गतिविधियों का विरोध किया था। उन्होंने बाइबिल का बंगाली (१८०६ पूर्ण) और संस्कृत (१८१८ पूर्ण) में अनुवाद किया।

झारखंड में ईसाई धर्मांतरण

आरम्भ में तीन पादरी झारखंड में धर्मांतरण कराने के लिए भेजे गए। तीनों ने बहुत मेहनत किया, लेकिन लगभग दो दशक तक काम करने के बाद भी एक भी व्यक्ति धर्मांतरित नहीं हुआ। तब ये तीनों पादरी लौटकर वापस इंग्लैण्ड गए, वहाँ से उन्हें यह कहकर वापस भेजा गया कि संकट में फंसे गरीब परिवारों को टारगेट करो। तीनों वापस आए तो तीन परिवार धर्मांतरित हुए। एक सिंहभूम में, एक खूंटी में और एक सिमडेगा में। वहाँ से शुरु हुआ इनका धर्मांतरण का खेल। कोलकाता से आये आर्च बिशप स्टांइस ने हो जनजाति समुदाय के 8 परिवारों के 28 सदस्यों को ईसाई धर्म में प्रवेश कराया था। यहीं से पूरे छोटानागपुर में ईसाई समुदाय का विस्तार हुआ था।

ओडिशा में ईसाई धर्मांतरण

7 फरवरी 1822 को इंग्लैंड के जनरल बैपटिस्ट मिशनरी सोसाइटी के विलियम बैम्पटन और जेम्स पेग्स उड़ीसा के पट्टामुंडई तट पर पहुँचे और बरहामपुर में प्रचार किया। श्री एरन सेनापोटी का पहला बपतिस्मा 25 दिसंबर 1827 को बरहामपुर में हुआ था। उड़िया प्रचारक गंगाधर सारंगी और रामचंद्र जी जचुक का पहला समन्वय 1835 में हुआ था। 1867 में भारतीय सहायक मिशन का गठन किया गया और 1899 तक जारी रहा। इसके बाद, भारतीय बैपटिस्ट मिशनरी सोसाइटी का गठन किया गया और 1909 तक जारी रहा, जिसके बाद यह सोसाइटी 1933 तक दूसरे नाम, उत्कल क्रिश्चियन चर्च यूनियन के नाम से जारी रही, जब इसने अपना नाम फिर से बदल लिया, एक यूनियन के रूप में नहीं बल्कि एक केंद्रीय परिषद के हिस्से के रूप में। बाद में उड़ीसा बैपटिस्ट इवेंजलिस्टिक क्रूसेड ने 1969 से स्वतंत्र रूप से उड़ीसा बैपटिस्ट की इंजील संबंधी जिम्मेदारी संभाली।

छत्तीसगढ़ में ईसाई धर्मांतरण

रायपुर के रोमन कैथोलिक आर्चडायसी का प्रांत में अपना मुख्यालय है। छत्तीसगढ़ में सुफ़रागन सूबा, जगदलपुर के सिरो–मालाबार कैथोलिक सूबा, अंबिकापुर के रोमन कैथोलिक सूबा, जशपुर के रोमन कैथोलिक सूबा और रायगढ़ के रोमन कैथोलिक सूबा हैं। ज्योतिपुर में कई प्रोटेस्टेंट चर्च हैं। छत्तीसगढ़ गुड़गांव के नवगठित सिरो–मलंकरा कैथोलिक सूबा का हिस्सा है। जांजगीर मेनोनाइट चर्च की स्थापना २०वीं सदी की शुरुआत में हुई थी।

तमिलनाडू में ईसाई धर्मांतरण

सेंट थॉमस ने कन्याकुमारी में ईसाई धर्म की शुरुआत की। उन्होंने ६३ ईस्वी में थिरुविथमकोड में एक चर्च का निर्माण किया। १६वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में, फ्रांसिस जेवियर के आतंक के कारण हजारों मछुआरे कैथोलिक धर्म में परिवर्तित हो गए।

आंध्रप्रदेश में ईसाई धर्मांतरण

रोमन कैथोलिक चर्च के फ़्रैंचिसन १५३५ में ईसाई धर्म को डेक्कन क्षेत्र में लाए, लेकिन १७५६ ईस्वी के बाद ही, जब उत्तरी सरकार ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन में आ गई, तब यह क्षेत्र में ईसाई प्रभाव अधिक हो गया। आंध्रप्रदेश में

पहले प्रोटेस्टेंट मिशनरी रेव. क्रैन और रेव। डेस ग्रेंज जिन्हें लंदन मिशनरी सोसाइटी द्वारा भेजा गया था। उन्होंने १८०५ ईस्वी में विशाखापत्तनम में अपना स्टेशन स्थापित किया।

कर्नाटक में ईसाई धर्मांतरण

1545 में पुर्तगालियों और सेंट फ्रांसिस जेवियर के आगमन के साथ 16 वीं शताब्दी के दौरान ईसाई धर्म कर्नाटक पहुँचा। अधिकांश ईसाई कर्नाटक के पश्चिमी तट पर पाए जाते हैं, जो करवार से मैंगलोर तक फैले हुए हैं। कर्नाटक के अन्य भागों की तुलना में मैंगलोर में रोमन कैथोलिकों की सबसे बड़ी आबादी है।

केरल में ईसाई धर्मांतरण

सेंट थॉमस के साथ ईसाईयत केरल पहुंचा। थॉमस एक प्राचीन बंदरगाह मुज़िरिस में केरल तट पर ५२ ईस्वी में आया था।

मुगल काल में

मुगल दरबार में ईसाईयों के आगमन की अनेक कहानियाँ सुनाई जाती हैं, लेकिन यह सत्य है कि ईसाई धर्मांतरण का खेल भारत में बहुत पुराना है। मुगलों को वैसे ईसाई मिशनरियों से कोई अधिक समस्या न थी कि क्योंकि यह उनका अपना देश नहीं था, न ही उनके लोग (मुसलमान) धर्मांतरित हो रहे थे। वो तो सत्ता पर कब्जा कर के, भारत को लूट ही रहे थे। इसीलिए उनके काल में ही जेवियर और लोयला ने हजारों हिन्दूओं को पहले केरल–कर्नाटक में और बाद में गोवा में जाकर जिंदा जला दिया। एक–एक दिन में बीस–पचीस हजार हिन्दूओं को जिंदा जलाया गया, लेकिन उन हिन्दूओं को न्याय मिलने का कोई मार्ग नहीं था। क्योंकि मुस्लिम शासक भी हिन्दूओं के प्रति बहुत अच्छा भाव नहीं रखते थे।

नियोगी कमीशन की रिपोर्ट

मध्य प्रदेश सरकार द्वारा 1956 में प्रकाशित एक रिपोर्ट है। यह भारत में मिशनरीज की धर्मांतरण गतिविधियों पर एक रिपोर्ट है और इसे 1954 में संकलित और पूरा किया गया था और 1956 में प्रकाशित किया गया था। नागपुर उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त मुख्य न्यायाधीश एम. भवानी शंकर नियोगी की अध्यक्षता वाली समिति में पाँच अन्य सदस्य शामिल थे, एम.बी.पाठक, घनश्याम सिंह गुप्ता, एस.के.जॉर्ज, रतनलाल मालवीय और भानु प्रताप सिंह। कॉंग्रेस पार्टी की सरकार द्वारा स्थापित रिपोर्ट में "पूरी तरह से स्वैच्छिक" न होने वाले धार्मिक रूपांतरण पर "कानूनी प्रतिबंध" की सिफारिश की गई थी, जिसे लागू नहीं किया गया। समिति ने 11,360 व्यक्तियों से संपर्क किया, 700 अलग–अलग गाँवों के लोगों का साक्षात्कार लिया और 375 लिखित बयान और प्रश्नावली से 385 उत्तर प्राप्त किए। उन्होंने 14 जिलों में अस्पतालों, स्कूलों, चर्चों और अन्य सँस्थानों का दौरा किया, कई क्षेत्रों का दौरा किया और गवाहों से बात की। समिति ने दर्ज किया कि "गैर–ईसाई पक्ष की ओर से एक आम शिकायत थी कि स्कूलों और अस्पतालों का इस्तेमाल धर्मांतरण को बढ़ावा देने के साधन के रूप में किया जा रहा है।" इसने कहा कि "रोमन कैथोलिक पादरियों या प्रचारकों द्वारा नवजात शिशुओं को यीशु के नाम पर 'आशीर्वाद' देने, मुकदमेबाजी या घरेलू झगड़ों में पक्ष लेने, नाबालिग बच्चों और महिलाओं का अपहरण करने और असम या अंडमान में बागानों के लिए मजदूरों की भर्ती करने की प्रथा का भी संदर्भ दिया गया, जो अज्ञानी और अनपढ़ लोगों के बीच ईसाई धर्म का प्रचार करने का एक साधन है।" (गोयल 1998, पृष्ठ 13) रिपोर्ट में लिखा गया है कि खास तौर पर रोमन कैथोलिक मिशनों ने धर्मांतरण के लिए पैसे उधार देने का इस्तेमाल किया। वे ऐसे ऋण देते थे, जिन्हें बाद में माफ कर दिया जाता था, अगर कर्जदार ईसाई बन जाता था। (गोयल 1998, पृष्ठ 115)

धर्मांतरण का खेल पुराना है अब यह बंद होना चाहिए

अलग–अलग राज्यों में ईसाईयत के आरम्भ के बारे में उपलब्ध जानकारी सांझा कर के यही बताने का प्रयास किया है कि इलाहाबाद उच्च न्यायालय के निर्णय में उठाया गया यह विषय नया नहीं है। यह आज ही उपस्थित नहीं हुआ है। यह पुरानी समस्या अब विकराल रूप ले चुका है। न्यायालय भी इस बात को लेकर चिंतित है कि बहुसँख्यक हिन्दू समाज धर्मांतरण के इस षड्यंत्र के कारण अल्पसँख्यक न बन जाए। न्यायालय की चिंता से हिन्दू समाज भी चिंतित है, इस समस्या से निपटने का मार्ग ढूंढ़ रहा है। रामकली प्रजापति की भांति असँख्य परिवार धर्मांतरण का दंश झेल रहे हैं। कई तो न्यायालय तक जा भी नहीं पाते। लेकिन समाधान उनको भी देना समाज, न्यायालय और संसद तीनों का जिम्मा है।

विहिप की स्थापना

धर्मांतरण की चिंता में से ही विहिप का जन्म हुआ था। नियोगी कमीशन की रिपोर्ट से घबराया हिन्दू समाज पूरे विश्व में परेशान था। तब विदेशों में रहने वाले हिन्दू भी अपने पुरखों की भूमि भारत की इस दुर्दशा से चिंतित हो उठे थे। सन्त समाज चिन्तित था। संघ के स्वयंसेवक चिन्तित थे। द्वितीय सरसघचालक गोलवलकर जी से विदेशों से आये हिन्दू भी मिल रहे थे, संत भी मिल रहे थे, चिन्तन–मन्थन चल रहा था, इसी समुद्र मंथन में से 1964 में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर विहिप की स्थापना हुई।

9 राज्यों में हिन्दू हो चुका अल्पसँख्यक

केंद्र सरकार के अनुसार, राज्य सरकार को हिन्दूओं को अल्पसँख्यक घोषित करने का अधिकार है। केंद्र सरकार ने कहा कि जम्मू कश्मीर, मिजोरम, नागालैंड, मणिपुर, मेघालय, अरुणांचल प्रदेश, पंजाब, लक्ष्यद्वीप, लद्दाख राज्य स्तर पर अल्पसँख्यक वर्ग की पहचान के लिए दिशा–निर्देश दे सकते हैं। केंद्र सरकार ने 9 राज्यों में हिंदुओं को 'अल्पसँख्यकश का दर्जा देने की मांग को लेकर सर्वोच्च न्यायालय में हलफनामा दाखिल किया है। अधिवक्ता अश्विनी कुमार उपाध्याय ने इस संदर्भ में सर्वोच्च न्यायालय में याचिका दायर किया था। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने जो चिंता जताया है, उसके आलोक में यह तथ्य भी प्रासंगिक है कि 9 राज्यों में हिन्दू पहले ही अल्पसँख्यक हो चुका है। यदि तत्काल चिंता न की गई, तो पुरे देश में हिन्दूओं के अल्पसँख्यक हो जाने का खतरा है। इसपर सभी देशभक्तों को चिंता करने की जरूरत है। इस दिशा में सबके सामूहिक प्रयत्न आवश्यक हैं।

क्या राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ
एससी, एसटी और अन्य आदिवासी समुदायों के खिलाफ है ?

पंकज जगन्नाथ जायसवाल

2024 के आम चुनाव में मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए कई तरह की तरकीबें अपनाई गईं। इन चुनावों में तकनीक, खास तौर पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल भी किया गया। मतदाताओं, खास तौर पर ग्रामीण मतदाताओं को भ्रमित करने के लिए कई फर्जी वीडियो तैयार किए गए। संघ के सरसंघचालक मोहन जी भागवत की ऐसी ही एक फर्जी फिल्म ओबीसी, एससी, एसटी और एनटी लोगों के मन में यह डर पैदा करने के लिए बनाई गई थी कि संघ आरक्षण विरोधी है और इसका निहित संदेश यह था कि अगर भाजपा सत्ता में आई तो आरक्षण खत्म कर दिया जाएगा। जब संघ के शीर्ष नेता डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर की प्रशंसा करते हैं और इस महान इंसान को सम्मान देने के लिए पूरे भारत में कई कार्यक्रम आयोजित करते हैं, तो कई तथाकथित बुद्धिजीवी, कम्युनिस्ट, शहरी नक्सली और राजनीतिक नेता संघ का मजाक उड़ाते हैं। आप निश्चित रूप से संघ के शीर्ष अधिकारियों द्वारा अपने भाषणों में डॉ. अंबेडकर के प्रति दिखाए गए सम्मान और प्यार का मजाक उड़ा सकते हैं और उसकी निंदा कर सकते हैं, लेकिन आप संघ और उसके सहयोगी संगठनों द्वारा समाज के हाशिए पर पड़े वर्गों के लिए किए गए काम को कैसे नकार सकते हैं? प्रयास दिखाई दे रहे हैं और इन लोगों में महत्वपूर्ण बदलाव आया है। दूर–दराज के इलाकों में भी स्कूल, छात्रावास, चिकित्सा सुविधाएँ और खेल सुविधाएँ उपलब्ध कराना सराहनीय है। इन इलाकों में काम करना बेहद मुश्किल है, इसके बावजूद स्वयंसेवक हर दर्द को बर्दाश्त करते हैं।

अपनी स्थापना के बाद से ही आरएसएस ने कभी भी जाति के आधार पर किसी के साथ भेदभाव नहीं किया है। संघ के स्वयंसेवक हमेशा से 'समता', 'ममता' और 'समरसता' में विश्वास करते रहे हैं, न केवल भौतिक रूप से बल्कि भावनात्मक रूप से भी वे अपनेपन की भावना से जुड़े हुए हैं। आरएसएस ने सत्य का प्रचार करके और उसे जमीनी स्तर पर लागू करके हमारे देश में अस्पृश्यता और जातिगत भेदभाव को मिटाने के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किए हैं।

'तीसरे सरसंघचालक बालासाहेब देवरस जी ने अस्पृश्यता के बारे में क्या कहा, देखिए'

यदि जाति व्यवस्था और अस्पृश्यता को समाप्त करना है, तो उसमें विश्वास करने वालों में परिवर्तन लाना होगा। ऐसे लोगों पर हमला करने या उनसे लड़ने के बजाय, दूसरा विकल्प हो सकता है। मुझे संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार के साथ काम करने का सौभाग्य मिला। वे कहते थे, 'हमें अस्पृश्यता को मानने या उसका पालन करने की आवश्यकता नहीं है।'

इसी आधार पर उन्होंने संघ की शाखाएँ, अनेक पाठ्यक्रम और कार्यक्रम भी विकसित किए। उस समय भी ऐसे लोग थे, जो उनसे भिन्न विचार रखते थे। हालाँकि डॉ. जी को यकीन था कि आज नहीं तो कल वे निःसंदेह उनके विचारों से सहमत होंगे। परिणामस्वरूप उन्होंने इस बारे में कोई हंगामा नहीं किया, किसी से झगड़ा नहीं किया या अवज्ञा के लिए किसी के खिलाफ कोई नकारात्मक कार्रवाई नहीं की। क्योंकि उन्हें इस बात में कोई संदेह नहीं था कि सामने वाले व्यक्ति के इरादे भी अच्छे थे। कुछ आदतों के कारण वे शुरू में झिझक सकते थे, लेकिन पर्याप्त समय दिए जाने पर वे निःसंदेह अपनी गलतियों से सीखेंगे।

शुरुआती दिनों में संघ के एक शिविर में कुछ भाइयों ने अनुसूचित जाति के भाइयों के साथ भोजन करने में झिझक व्यक्त की थी। डॉ. जी ने उन्हें

नियम नहीं बताए और न ही शिविर से निकाला। अन्य सभी स्वयंसेवक, डॉक्टर जी और मैं भोजन के लिए एक साथ बैठे। जो झिझक रहे थे, वे अलग बैठे। लेकिन बाद में दूसरे भोजन के दौरान, वही भाई स्वयं हमारे साथ आकर बैठे। – स्वर्गीय बाला साहेब देवरस जी, पुणे वसंत व्याख्यानमाला (1974)

जब महात्मा गाँधी और बाद में डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर आरएसएस के शिविरों में गए, तो वे संतुष्ट थे कि आरएसएस में जाति या सामाजिक पृष्ठभूमि के विवरण को न तो पूछा जाता है और न ही कोई महत्व दिया जाता है। आरएसएस में कई लोग वंचित वर्गों के साथ अपनी पहचान बनाने का सचेत प्रयास करते हैं। लगभग 23 साल पहले डॉ. अंबेडकर की जन्म शताब्दी के दौरान, आरएसएस के कई लोगों ने यह सुनिश्चित किया कि उनके घरों में डॉ. अंबेडकर की एक तस्वीर सजी हो। पुणे के संघ स्वयंसेवक गिरीश प्रभुणे जैसे कई लोग पारधी और इसी तरह के विमुक्त, खानाबदोश आदिवासी समुदायों के उत्थान के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं।

संघ और उससे जुड़े संगठन और संस्थान समाज के हाशिए पर पड़े समूहों को कैसे लाभ पहुँचाते हैं?

कुछ दशक पहले आरएसएस के सर संघचालक पूज्य श्री गुरुजी ने प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी श्री रमाकांत (बाला साहब) देशपांडे को आदिवासी समाज की सेवा और आर्थिक विकास के लिए कल्याण आश्रम शुरू करने के लिए प्रेरित किया था। आज वह बीज एक जन आंदोलन बन चुका है। अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम ने अस्पतालों, स्कूलों, छात्रावासों, बालवाड़ियों, वयस्क शिक्षा केंद्रों और विभिन्न अन्य मानवीय गतिविधियों के माध्यम से आदिवासी भारत के लगभग हर नुक्कड़ और कोने में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। अंडमान से लेह और अरुणाचल से नीलगिरी की पहाड़ियों तक समर्पित कार्यकर्ताओं का एक व्यापक नेटवर्क है, जिसमें पुरुष और महिलाएँ समान रूप से शामिल हैं, जिन्होंने आदिवासियों के जीवन में गहरे बदलाव लाए हैं। विडंबना यह है कि जबकि कुछ औपनिवेशिक 'विद्वानों' और मानवविज्ञानियों ने विभिन्न जनजातियों को 'आपराधिक जनजातियों', 'सिर काटने वालों' आदि के रूप में लेबल करना जारी रखा, आक्रामक धर्मांतरण करने वालों ने उन्हें तिरस्कारपूर्वक बुतपरस्त और मूर्तिपूजक के रूप में संदर्भित किया और खुद को उनकी 'पापी' आत्माओं के एकमात्र मुक्तिदाता के रूप में प्रस्तुत किया।

हालांकि आरएसएस और अन्य सहयोगी संगठनों ने आदिवासियों के सच्चे इतिहास और कैसे उन्होंने प्रभु राम और कृष्ण का समर्थन किया, ब्रिटिश शासन और अन्याय के खिलाफ उनका विरोध और लड़ाई यह सच्चाई सामने लायी। हर साल आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों को याद किया जाता है और उन्हें श्रद्धा के साथ सम्मानित किया जाता है। समाज को यह स्पष्ट रूप से समझना चाहिए कि उपनिवेशवादियों और कम्युनिस्टों ने हमेशा आदिवासियों को तिरस्कृत और अपमानित किया है, जबकि संघ और उसके सहयोगियों ने हमेशा उन्हें भाई और बहन के रूप में माना है। वनवासी कल्याण आश्रम पूरे भारत में मानवीय गतिविधियों की एक श्रृंखला के माध्यम से जनजातियों (आदिवासियों) की भलाई को बढ़ावा देता है। 397 आदिवासी जिलों में से 338 में स्वदेशी लोगों की मदद के लिए विभिन्न पहल हैं। लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए 52,323 गाँवों में काम किया जा रहा है, भविष्य में और गाँवों को शामिल किया जाएगा। आर्थिक गतिविधियों के अलावा, स्थानीय सँस्कृति को प्रोत्साहन और बढ़ावा दिया जाता है। वनवासी कल्याण आश्रम का लक्ष्य प्रत्येक आदिवासी भाई और बहन के पूर्ण विकास के लिए काम करना है।

'वर्ष 2022 तक कुछ विकासात्मक गतिविधियाँ'

छात्रावास सुविधा – लड़कों के लिए 191 छात्रावास और लड़कियों के लिए 48 छात्रावास बनाए गए हैं।

शिक्षा केंद्र – अब तक 455 औपचारिक शिक्षा केंद्र बनाए गए हैं और पूरे देश में 3,478 अनौपचारिक शिक्षा केंद्र काम कर रहे हैं। इससे 63,000 से अधिक लाभार्थी लाभान्वित हुए हैं।

कृषि विकास केंद्र – बेहतर प्रथाओं और कम लागत के साथ उपज में सुधार के लिए 56 केंद्र विकसित किए गए हैं।

कौशल विकास केंद्र – युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने और उनके जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए उन्हें विभिन्न कौशल में प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है। पूरे देश में 104 कौशल विकास केंद्र स्थापित किए गए हैं।

स्वयं सहायता समूह – आपसी सहयोग से स्थानीय जरूरतों का ख्याल रखने के लिए स्वयं सहायता समूह। अब तक 3,348 समूह बनाए गए हैं।

चिकित्सा सुविधाएँ – 16 अस्पताल बनाए गए और 287 चिकित्सा शिविर आयोजित किए गए। इन लोगों की भलाई के लिए 4,277 ग्राम स्वास्थ्य कार्यकर्ता काम कर रहे हैं।

'विद्या भारती'

आरएसएस की एक शैक्षणिक संस्था है, जिसे विद्या भारती के नाम से जाना जाता है। वे पूरे भारत में 20,000 से ज्यादा स्कूलों का संचालन करते हैं। उनमें से कई आदिवासी इलाकों में हैं। जहाँ वे कम लागत वाली शिक्षा (अन्य प्रमुख ब्रांडों और निजी स्कूलों से कम) और यहाँ तक कि कम आय वाले विद्यार्थियों को मुफ्त शिक्षा प्रदान करते हैं। उनके पास एक प्रोटोकॉल है, जिसमें प्रत्येक छात्र दूसरे को भाई/बहन और उनके पहले नाम से संबोधित करता है। इससे जाति–आधारित पहचान खत्म हो जाती है। इसलिए वे वास्तव में दलितों और आदिवासियों को एक ही मंच पर लाने का लक्ष्य बना रहे हैं।

'सेवा भारती'

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से प्रेरित एक सामाजिक सेवा संगठन, राष्ट्रीय सेवा भारती, शहरी मलिन बस्तियों, दूरदराज के क्षेत्रों और आदिवासी समुदायों में वंचितों के लिए स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और रोजगार में सुधार लाने के उद्देश्य से 35,000 से अधिक परियोजनाओं का प्रबंधन करता है। संगठन (सेवा भारती) की स्थापना 1989 में हुई थी, जब तीसरे आरएसएस सरसंघचालक बालासाहेब देवरस ने 1979 में दिल्ली में एक बैठक बुलाई थी, जिसमें एक ऐसा संगठन स्थापित किया गया था, जो स्वास्थ्य, सेवा और शिक्षा के क्षेत्रों में पूरी तरह से गरीबों और कमजोर लोगों के साथ काम करेगा।

राष्ट्रीय सेवा भारती अब क्रमशः शिक्षा और स्वास्थ्य में लगभग 12,000 कार्यक्रम चलाती है। यह समाज के गरीब वर्गों को आत्मनिर्भर बनने में मदद करने के लिए 11,221 सामाजिक सेवा पहल और 6,763 कौशल विकास कार्यक्रम भी चलाता है। संगठन की विभिन्न गतिविधियों में 2 लाख से अधिक स्वयंसेवक शामिल हैं। इसमें आरएसएस, बजरंग दल और विश्व हिंदू परिषद के स्वयंसेवक शामिल हैं। सेवा भारती और इसके सहयोगी संगठन प्राकृतिक आपदाओं के दौरान जरूरतमंदों की मदद भी करते हैं। यह 3,000 से ज्यादा किशोरी विकास केंद्र चलाता है, जहाँ किशोर लड़कियों को शिक्षा, कौशल विकास, आत्मरक्षा, स्वास्थ्य और दूसरे विषयों पर प्रशिक्षण दिया जाता है। इसका मुख्य लक्ष्य युवा लड़कियों को देश के मूल्यों और परंपराओं के अनुसार आर्थिक और सामाजिक रूप से सही मायने में सशक्त बनाने में मदद करना है। ये संस्थाएँ सिलाई, टेलरिंग और डिजाइनिंग के साथ–साथ अचार, पापड़ और मसाला बनाने की ट्रेनिंग देती हैं।

जाति और समुदाय का समाज के साथ संबंध समझाने का आरएसएस का अपना तरीका है। दृष्टिकोण यह है कि शरीर के सभी अंगों की तरह हर वर्ग महत्वपूर्ण है और सभी एक दूसरे पर निर्भर भी हैं। शरीर के एक अंग का संबंध पूरे शरीर से होता है, उसी तरह समाज का हर वर्ग समाज से जुड़ा हुआ है। यह संबंध एक दूसरे से भी जुड़ा हुआ है और पूरे शरीर से भी। इसलिए श्रेष्ठता–हीनता का संघर्ष इस परस्पर निर्भरता से हल हो जाता है, जो सह–कार्य और पारस्परिकता की भावना से पूरित होता है। इसलिए पिछले कई वर्षों से जो झूठी कहानी गढ़ी जा रही है कि संघ संविधान, आरक्षण और दलित विरोधी है, वह केवल एक मजाक है, जिससे कुछ लोग गुमराह हो सकते हैं, लेकिन लंबे समय में लोगों को सच्चाई पता चल जाती है। पिछले 99 वर्षों में हम देखते हैं कि समाज के इन वर्गों से स्वयंसेवकों की सँख्या में तेजी से वृद्धि हुई है। जो लोग आरएसएस के बारे में नकारात्मक और झूठे आख्यानों में विश्वास करते हैं और उन्हें बढ़ावा देते हैं, उन्हें विश्लेषणात्मक तथ्य लोगों के सामने पेश करने से पहले, इसकी विचारधारा, कार्यप्रणाली, कई कार्यक्रमों और गतिविधियों पर निष्पक्ष शोध करना चाहिए। सत्य की जीत हो।

pankajjayswal1977@gmail.com

सामाजिक समरसता अभियान की अ.भा. बैठक

मुम्बई। विश्व हिंदू परिषद सामाजिक समरसता अभियान की दो दिवसीय अखिल भारतीय बैठक केशव सृष्टि भाईंदर, मुंबई, कोंकण प्रांत, महाराष्ट्र में संपन्न हुई, जिसमें सामाजिक समरसता विषय को लेकर कार्य करने वाले देश भर के प्रमुख कार्यकर्ता उपस्थित रहे। उद्घाटन सत्र में विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय संगठन महामंत्री श्री मिलिंद परांडे जी विशेष रुप से उपस्थित रहकर मार्गदर्शन दिया।

द्वितीय सत्र में केंद्रीय सह संगठन महामंत्री श्री विनायक राव देशपांडे जी का मार्गदर्शन एवं मुख्य वक्ता पद्मश्री रमेश जी पतंगे जी का 'संविधान एवं समरसता' विषय पर बौद्धिक हुआ। समापन सत्र में श्री विनायक राव जी द्वारा सामाजिक समरसता संदर्भ में संतों के योगदान पर मार्गदर्शन हुआ एवं विश्व हिन्दू परिषद के केंद्रीय महामंत्री श्री बजरंग लाल जी बागड़ा जी ने सामाजिक समरसता के विषय को लेकर कार्यकर्ताओं को किस प्रकार सहृदयी हो कार्य करना है, उस संदर्भ विशेष पर मार्गदर्शन दिया। विश्व हिंदू परिषद केंद्रीय मंत्री एवं सामाजिक समरसता अभियान के अखिल भारतीय प्रमुख देवजी भाई रावत जी ने संगठन दृढ़ीकरण के संदर्भ में मार्गदर्शन दिया।

देश भर से पधारे हुए कार्यकर्ताओं द्वारा अपने–अपने प्रांत का वृत कथन के साथ–साथ संपन्न कार्यक्रम एवं आगामी कार्यक्रमों की योजना बनाई गई।

प्रस्तुति : रसेश भाई रावल,
विश्व हिन्दू परिषद, सामाजिक समरसता अभियान–गुजरात क्षेत्र।

सदियों पहले समूचे विश्व के लिए ज्ञान का सागर बने जिस नालंदा विश्वविद्यालय को आक्रांताओं ने तहस-नहस कर दिया था, उसका पुनरुत्थान एक बहुत बड़ा और युगांतकारी कदम है। श्रीराम मंदिर की स्थापना के उपरांत नालंदा हमारे राष्ट्र के पुनरुत्थान का एक और उदाहरण बना है। ''कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।''

नालंदा विश्वविद्यालय के पुनरुत्थान के मायने

प्रो. महेश चंद गुप्ता

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बिहार के राजगीर में नालंदा विश्वविद्यालय के नए परिसर का उद्घाटन किया। इसी के साथ सदियों के बाद नालंदा विश्वविद्यालय पूरे विश्व में ज्ञान के प्रसार के लिए उठ खड़ा हुआ है। 455 एकड़ में 1749 करोड़ की लागत से बना नालंदा का नया परिसर केवल कंकरीट की एक इमारत भर नहीं है, बल्कि इस इमारत के निर्माण से हमारे देश का गौरवशाली इतिहास भी पुनजीर्वित हुआ है। यह भारत को विश्व गुरु बनाने के लक्ष्य की ओर बढ़ा एक महत्वपूर्ण कदम है, जिसके जरिए समूची दुनियाँ में ज्ञान की अलख जगाने के साथ–साथ एक नया इतिहास रचा जाना तय हो गया है।

तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के महज दस दिन बाद मोदी नालंदा विश्वविद्यालय के कार्यक्रम में गए हैं। मोदी का नालंदा जाना अनायास नहीं है, बल्कि यह उनका पूरे सोच–विचार, विमर्श और चिंतन के बाद लिया गया निर्णय है। अब यह बात किसी से छिपी नहीं है कि मोदी जो भी निर्णय करते हैं, उसमें कोई न कोई बड़ा उद्देश्य निहित होता है। मोदी नालंदा के बहाने देश को आगे बढने का संदेश दे रहे हैं।

सदियों पहले समूचे विश्व के लिए ज्ञान का सागर बने जिस नालंदा को आक्रांताओं ने जलाकर खाक और तहस–नहस कर दिया था, उसका पुनरुत्थान एक बहुत बड़ा और युगांतकारी कदम है। श्रीराम मंदिर की स्थापना के उपरांत नालंदा हमारे राष्ट्र के पुनरुत्थान का एक और उदाहरण बना है। कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।

नालंदा में प्राचीन विश्वविद्यालय के खंडहरों के पास नई इमारत की तामीर हमें गौरवान्वित कर रही है। वैसे तो इमारतें रोज बनती हैं, मगर नालंदा में यह नव निर्माण अनूठा है, देश के लिए गर्व का विषय है। नालंदा में मोदी ने कहा भी है कि ''मैं नालंदा को भारत की विकास यात्रा के लिए एक शुभ संकेत के रूप में देखता हूँ। नालंदा केवल नाम नहीं है, नालंदा एक पहचान है, एक सम्मान है, नालंदा एक मूल्य है, नालंदा मंत्र है, गौरव है और गाथा है। नालंदा है उद्घोष इस सत्य का कि आग की लपटों में पुस्तकें भले जल जाएँ, लेकिन आग की लपटें ज्ञान को नहीं मिटा सकतीं। नालंदा के ध्वंस ने भारत को अंधकार से भर दिया था। अब इसकी पुनर्स्थापना भारत के स्वर्णिम युग की शुरुआत करने जा रही है।''

मोदी ने सच ही कहा है क्योंकि आक्रांताओं ने नालंदा के वैभव को तीन बार नष्ट किया। दो बार इसका पुनर्निर्माण किया गया। 12 वीं शताब्दी में कुतुबद्दीन ऐबक के सेनापति बख्तियार खिलजी ने नालंदा विश्वविद्यालय के लाखों पुस्तकों वाले पुस्तकालय में आग लगवा दी। इतिहासकारों के अनुसार यह विनाशकारी आग तीन महीने तक भडकती रही, जिससे वहाँ सब कुछ नष्ट हो गया। नालंदा में लगाई गई आग किसी इमारत, पुस्तकालय को नष्ट करने का नहीं, बल्कि भारत के गौरव को आहत करने का प्रयास था, क्योंकि प्राचीन मगध साम्राज्य (आधुनिक बिहार) में 5वीं शताब्दी ई. में स्थापित नालंदा विश्वविद्यालय का नाम समूची दुनियाँ में

था। इसमें दुनियाँ भर के दस हजार विद्यार्थी पढ़ते थे। दुनियाँ के पहले आवासीय विश्वविद्यालय के रूप में नालंदा विश्वविद्यालय का वैभव ही ऐसा था, जिसने चीन, कोरिया, जापान, तिब्बत, मंगोलिया, श्रीलंका और दक्षिण पूर्व एशिया सहित दुनियाँ भर के विद्वानों को आकर्षित किया। नालंदा में चिकित्सा, आयुर्वेद, बौद्ध धर्म, गणित, व्याकरण, खगोल विज्ञान और भारतीय दर्शन जैसे विषय पढ़ाए जाते थे। भारतीय गणित के प्रणेता और शून्य के आविष्कारक आर्यभट्ट छठी शताब्दी ईस्वी के दौरान नालंदा के प्रतिष्ठित शिक्षकों में से एक रहे। इतिहासकारों के अनुसार सदियों पहले नालंदा में दाखिला आसान नहीं था। यहाँ प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थियों को कठिन साक्षात्कार प्रक्रिया से गुजरना पड़ता था।

यह सब इतना वैभवशाली था, जो आसुरी शक्तियों और विनाशकारी सोच वालों से देखा नहीं जा रहा था। आसुरी शक्तियों ने समय–समय पर हमारे वैभव को मिटा कर हमें निराश, हताश और आहत करने के लिए प्रयास किए। अतीत में समय चक्र कुछ ऐसे चला, जिससे आसुरी शक्तियाँ हावी हो गईं। विदेशी आक्रांताओं की वजह से एक लंबे कालखंड तक देश में प्रतिकूल हालात बने रहे। आक्रांताओं ने हमारे नालंदा जैसे विशाल भवन नष्ट कर दिए। हमारे अस्तित्व के खात्मे की कोशिशें की गईं, मगर वह ज्ञान को भला किस प्रकार मिटा पाते? उस ज्ञान को कैसे मिटाते, जो हमारे सहज स्वभाव में है। वक्ती तौर पर भवनों को ढ़हा देने वाले आक्रांता खुश हो कर चले गए, लेकिन जिस प्रकार काले बादलों का अंधेरा छंटने पर सूर्य की सप्त रश्मियाँ वातावरण को फिर से जगमग कर देती हैं, उसी प्रकार राष्ट्रीय महत्व के सँस्थान और उत्कृष्टता के रूप में नामित नालंदा विश्वविद्यालय से पुनः शिक्षा का उजियारा फूटना शुरू हो गया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने विश्वास व्यक्त किया है कि नालंदा वैश्विक हित का एक महत्वपूर्ण केंद्र बनेगा। मोदी का मिशन है कि भारत, दुनियाँ के लिए शिक्षा और ज्ञान का केंद्र बने और फिर से विश्व के समक्ष सर्वप्रमुख ज्ञान केंद्र के रूप में पहचाना जाए, लेकिन यह मिशन कैसे पूरा होगा, इस पर विचार किए जाने की जरूरत है। नालंदा विश्वविद्यालय भारत की शैक्षणिक विरासत और जीवंत साँस्कृतिक आदान–प्रदान का प्रतीक है। नालंदा का फिर से उठ खड़ा होना निश्चय ही खुशी का मौका है। यह हमारे शैक्षिक उत्थान की प्रेरणा बनेगा, मगर नालंदा की प्रेरणा तभी काम आएगी, जब हम शैक्षिक उत्थान के लिए समर्पित भाव से काम करेंगे। शैक्षिक उत्थान ही विकसित भारत की संकल्पना को साकार कर सकता है।

मैं चार दशक से ज्यादा समय तक दिल्ली यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर रहा हूँ। एक शिक्षक के रूप में लंबे अनुभव की बदौलत मेरी यह मान्यता है कि शिक्षा और विकास एक–दूसरे के पूरक हैं। शिक्षा की सीढ़ी पर चढ़कर ही विकास की प्रत्येक मंजिल पर पहुँचा जा सकता है। अगर हम आजादी के सौ साल पूरे होने के अवसर पर वर्ष 2047 तक भारत को एक विकसित देश के रूप में देखना चाहते हैं, तो यह शिक्षा की बदौलत ही संभव है, लेकिन यह इतना सरल और सहज नहीं है। इसके लिए देश के विश्वविद्यालयों के लिए जमकर काम करना होगा। सरकारी विश्वविद्यालयों को ऊर्जावान बनाना होगा। सभी राज्यों को अपने–अपने विश्वविद्यालयों का ढांचा मजबूत करने के लिए होड़ लगानी पड़ेगी। अभी देश में प्राथमिक शिक्षा से लेकर स्नातकोत्तर तक शिक्षा और सरकारी विश्वविद्यालयों की जो हालत है, वह बेहद चिंताजनक है।

आजादी के बाद सत्तर सालों में शिक्षा को नजरअंदाज ही किया गया है। बजट में शिक्षा के लिए पर्याप्त प्रावधान नहीं किए गए। इसी कारण हमारे सरकारी विश्वविद्यालय और अन्य उच्चतर सँस्थान पिछड़ गए। हमारे देश में प्राइवेट विश्वविद्यालय निरंतर विस्तार कर रहे हैं, पैसा कमा रहे हैं, लेकिन इसके विपरीत यूजीसी की फंडिंग वाले विश्वविद्यालय पिछड़ रहे हैं। हमारे ज्यादातर विश्वविद्यालयों का बुनियादी ढांचा मजबूत नहीं है। उनमें विश्व स्तरीय स्मार्ट क्लास रूम का अभाव है। अच्छे ऑडिटोरियम, लाइब्रेरी, एकेडमिक ब्लॉक्स और बेहतरीन लैब की कमी खलती है। जो भारत प्राचीन काल में समूचे विश्व में शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था, जिस भारत में उच्च शिक्षा के दुनियाँ के पहले विश्वविद्यालयों में शामिल सर्वाधिक महत्वपूर्ण और विख्यात नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना हुई, उस भारत में विश्वविद्यालयों की मौजूदा स्थिति विचारणीय है। इस वजह से देश में उच्च शिक्षा गुणवत्ता के लिहाज से पिछड़ रही है। धनवान लोगों के बच्चे तो उच्च शिक्षा के लिए विदेश चले जाते हैं और वहीं कॅरियर बनाकर बस भी जाते हैं। आम लोगों के बच्चे प्राइवेट विश्वविद्यालयों में शोषण झेल रहे हैं। यूजीसी फंडिंग वाले विश्वविद्यालयों की

स्थिति सुधारी जाए, तो हालात बदले जा सकते हैं। ऐसा तभी संभव है, जब हम हमारे विश्वविद्यालयों को वर्ल्ड रैंकिंग में लाएंगे। उन्हें बड़ा ब्रांड बनाने की दिशा में काम करेंगे।

हालांकि मोदी सरकार ने शैक्षिक उत्थान के प्रयास शुरू किए हैं। नई शिक्षा नीति इसका प्रमाण है। मोदी मानते हैं कि 'जब शिक्षा का विकास होता है, तो अर्थव्यवस्था और सँस्कृति की जड़ें भी मजबूत होती हैं। हम विकसित देशों को देखें तो पाएंगे कि वे अर्थ, साँस्कृतिक लीडर तब बने, जब वह एजुकेशनल लीडर हुए। आज दुनियाँ भर के छात्र उन देशों में जाकर पढ़ना चाहते हैं। कभी ऐसी स्थिति हमारे यहाँ नालंदा और विक्रमशिला जैसे सँस्थानों में हुआ करती थी।' मोदी के पास विजन है, वह व्यापक काम कर रहे हैं और देश का गौरव लौटा रहे हैं। अभी हम जिस कालखंड में जी रहे हैं, वह भारत के लिए क्रांतिकारी, गौरवशाली और बड़े सकारात्मक बदलावों का कालखंड है। पूरी दुनियाँ हमारी सँस्कृति को मान रही है। भारत की गौरवशाली और प्राचीन सँस्कृति की तरफ लोगों का रूझान है। पाश्चात्य सँस्कृति की ओर खिंचे रहने वाले युवा भी हमारी सँस्कृति को पुनः अंगीकार कर रहे हैं। मोदी का सपना भारत को विश्व गुरु बनाने का है। यह सपना शिक्षा की बदौलत सच हो सकता है। आज नालंदा फिर से उठ खड़ा हुआ है। इसी तर्ज पर आगे चलकर समूचे देश के विश्वविद्यालयों को प्रगति पथ पर बढ़ाया जाए। यह काम केवल सरकार या संबंधित विश्वविद्यालय प्रशासन के जिम्मे छोडने से नहीं होगा। इसके लिए सबको मिलकर काम करना होगा।

(लेखक प्रख्यात शिक्षाविद्, चिंतक और वक्ता हैं। वह 44 सालों तक दिल्ली यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर रहे हैं।)

profmcguptadelhi@gmail.com

संसद में शरीयत के विचार को पोषित कर संविधान पर प्रहार किया जा रहा है

दिव्य अग्रवाल (लेखक व विचारक)

शरीयत एक इस्लामिक कानून है, जिसमें सारे नियम मजहबी कटटरपंथी निर्मित एवं पोषित हैं। भारतीय संसद में जिस प्रकार संविधान को हाथ में लेकर, कोई फिलिस्तीन की जय बोल रहा है, कोई इस्लामिक इबादत पढ़ रहा है, कोई कह रहा है कि आतंकवादी को उसके मजहब से पहचानने पर आपत्ति है, लेकिन वास्तविक संविधान की बात कोई नहीं कर रहा। देश के सांसद जिन्हें भारतीय जनता ने सांसद बनाकर भेजा, वो भारत की नहीं फिलिस्तीन की बात कर रहे हैं, जम्हूरियत की बात कर रहे हैं, इस्लामिक इबादत कर रहे हैं, पर किसी भी अन्य सांसद को देश का संविधान खतरे में नजर नहीं आया। आज इस्लामिक विचारधारा से प्रेरित सांसदों की सँख्या कम होने पर भी मजहबी विचारधारा पूरा देश देखने और सुनने को मजबूर है। कल्पना कीजिए यदि इसी प्रकार मजहबी विचार पोषित होता रहा, तो भारत का प्रतिनिधित्व किसके हाथ में रहेगा? क्या भारत का संरक्षण भारतीय जनप्रतिनिधि कर पाएंगे ? क्योंकि भारत का प्रतिनिधित्व तब भी था, जब इस्लामिक समाज ने मजहब के नाम पर भारत की धरती छीन ली थी और गैर इस्लामिक समाज का नरसंहार हुआ था। केरल, बंगाल, कश्मीर में हुई हिंदुओं की नृसंश हत्या पर ओवैसी जैसे लोगों को कभी दर्द नहीं हुआ और आज फिलिस्तीन जो स्वयं इस्लामिक आतंकवाद का केंद्र है, उसकी आवाज भारत की संसद से बुलंद कर विश्व भर के इस्लामिक देशों को दिखाना चाहते हैं कि भारत के जन प्रतिनिधि कितने कमजोर हैं। भारत का भविष्य क्या है? यदि आज की स्थिति देखकर भी समझ नहीं आ रहा, तो इसका अर्थ है कि आप समझना चाहते ही नहीं हैं।

divyelekh@gmail.com

अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर को लेकर इतना हो-हल्ला क्यों ?

डॉ. प्रवेश कुमार

अभी हाल के दिनों में अयोध्या लोकसभा चुनाव में बीजेपी की हार को लेकर समाजवादी पार्टी समेत विपक्षी पार्टी इसे हिन्दू समाज की हार के रूप में दिखाने का प्रयास कर रहे हैं। वहीं श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में वर्षाकाल के दौरान छत से पानी टपकने का मामला इसी बीच आ जाता है। यह दोनों ही प्रश्न बड़े ही अतिरिक्त से लगते हैं, लोकसभा चुनाव एक चुनाव है, जिसमें कोई जीतता है, तो कोई हार जाता है। जिसने अपने क्षेत्र में मेहनत की, अपने क्षेत्र की जनता के संपर्क में रहा, वह चुनाव जीत जाता है, जो ऐसा नहीं करता वह हार जाता है। अब इसका मतलब यह कहाँ से हुआ कि श्री रामजन्मभूमि मंदिर बनने के बाद भी हार गये। इसमें यह स्पष्ट होना चाहिए कि प्रभु राम को किसी पार्टी–पॉलिटिक्स से क्या लेना ? राम तो सबके हैं, वह उनके भी हैं, जिन्होंने वर्षों उन्हें टेंट में रखा, कभी उन्हें काल्पनिक कहा। बिना किसी साक्ष्य के भी वर्षों न्यायिक प्रक्रिया में श्री रामजन्मभूमि मंदिर को उलझाए रखा।

सपा के अवधेश प्रसाद जी भी तो हिंदू हैं, वह स्वयं इस बात को कह चुके हैं, फिर इस पर विवाद क्यों होता है। वहीं दूसरा विषय श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में वर्षाकाल के दौरान छत से पानी टपकने का मामला, इसे काँग्रेस खूब सोशल मीडिया टीम से उठवा रही है। यह विवाद भी तथ्यों से बहुत दूर है, जिस पर श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के महामंत्री चम्पत राय जी ने बड़ी ही स्पष्टता से बताया है कि गर्भगृह जहाँ भगवान रामलला विराजमान हैं, वहाँ एक भी बूंद पानी छत से नहीं टपका है और न ही कहीं से पानी गर्भगृह में प्रवेश ही किया है। गर्भगृह के आगे पूर्व दिशा में मंडप है, इसे गूढ़ मण्डप कहा जाता है, वहाँ मंदिर के द्वितीय तल की छत का कार्य पूर्ण होने के बाद (भूतल से लगभग 60 फीट ऊँचा) घुम्मट जुड़ेगा और मण्डप की छत बन्द हो जाएगी। इस मंडप का क्षेत्र 35 फीट व्यास का है, जिसको अस्थायी रूप से प्रथम तल पर

> राम तो सबके हैं। वह उनके भी हैं जिन्होंने वर्षों उन्हें टेंट में रखा, कभी उन्हें काल्पनिक कहा। बिना किसी साक्ष्य के भी वर्षों न्यायिक प्रक्रिया में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर को उलझाए रखा।

ही ढ़क कर दर्शन कराये जा रहे हैं, वहीं द्वितीय तल पर पिलर निर्माण कार्य चल रहा है। रंग मंडप एवं गुढ़ मंडप के बीच दोनों तरफ (उत्तर एवं दक्षिण दिशा में) ऊपरी तलों पर जाने की सीढियाँ हैं। जिनकी छत भी द्वितीय तल की छत के ऊपर जाकर ढँकी जायेंगी, यह कार्य भी प्रगति पर है।

सामान्यतः पत्थरों से बनने वाले मंदिर में बिजली के कन्डुट एवं जंक्शन बॉक्स का कार्य पत्थर की छत के ऊपर होता है एवं कन्डुट को छत में छेद करके नीचे उतारा जाता है, जिससे मंदिर के भूतल के छत की लाइटिंग होती है। ये कन्डुट एवं जंक्शन बाक्स ऊपर के फ्लोरिंग के दौरान वाटर टाईट करके सतह में छुपाई जाती है। चूंकि प्रथम तल पर बिजली, वाटर प्रूफिंग एवं फ्लोरिंग का कार्य प्रगति पर है, अतः सभी जंक्शन बॉक्सेज में पानी प्रवेश कर वही पानी कंडूट के सहारे भूतल पर गिरा। ऊपर देखने पर यह प्रतीत हो रहा था कि छत से पानी टपक रहा है, जबकि यथार्थ में पानी कंडूट पाइप के सहारे भूतल पर निकल रहा था।

उपरोक्त सभी कार्य शीघ्र पूरा हो जाएगा। प्रथम तल की फ्लोरिंग पूर्णतः वाटर टाइट हो जाएगी और किसी भी जंक्शन से पानी का प्रवेश नहीं होगा, फलस्वरूप कन्डयुट के जरिये पानी नीचे तल पर भी नहीं जाएगा। मन्दिर एव परकोटा परिसर में बरसात के पानी की निकासी का सुनियोजित तरीके से उत्तम प्रबंध किया गया है। जिसका कार्य भी प्रगति पर है, अतः मंदिर एवं परकोटा परिसर में कहीं भी जलभराव की स्थिति नहीं होगी। सम्पूर्ण श्रीराम जन्मभूमि परिसर को बरसात के पानी के लिए बाहर शून्य वाटर डिस्चार्ज के लिए

प्रबंधन किया गया है। श्री राम जन्म भूमि परिसर में बरसात के पानी को अन्दर ही पूर्ण रूप से रखने के लिए रिचार्ज पिटों का भी निर्माण कराया जा रहा है। मन्दिर एवं परकोटा निर्माण कार्य तथा मन्दिर परिसर निर्माण/विकास कार्य भारत की दो अति प्रतिष्ठित कम्पनियों एल एंड टी तथा टाटा के इंजीनियरों एवं पत्थरों से मन्दिर निर्माण की अनेक पीढ़ियों की परम्परा के वर्तमान उत्तराधिकारी श्री चन्द्रकान्त सोमपुरा जी के पुत्र आशीष सोमपुरा व अनुभवी शिल्पकारों की देखरेख मे हो रहा है, अतः निर्माण कार्य की गुणवत्ता में कोई कमी नहीं है। उत्तर भारत में (लोहा का उपयोग किए बिना) केवल पत्थरों से मन्दिर निर्माण कार्य (उत्तर भारतीय नागर शैली में) प्रथम बार हो रहा है। देश–विदेश में केवल स्वामी नारायण परम्परा के मंदिर पत्थरों से बने हैं, भगवान के विग्रह की स्थापना, दर्शन, पूजन और निर्माण कार्य केवल पत्थरों के मंदिर में संभव है।

जानकारी के अभाव में मन विचलित हो रहा है, प्राण प्रतिष्ठा दिवस के पश्चात से लगभग एक लाख से एक लाख पन्द्रह हजार भक्त प्रतिदिन रामलला के बाल रूप के दर्शन कर रहे हैं। प्रातः 6.30 बजे से रात्रि 9.30 बजे तक दर्शन के लिए प्रवेश होता है, किसी भी भक्त को अधिक से अधिक एक घण्टा दर्शन के लिए प्रवेश, पैदल चलकर दर्शन करना, बाहर निकल कर प्रसाद लेने में लगता है। इस स्पष्टीकरण के बाद भी काँग्रेस समेत कई दल राजनीति कर रहे हैं। हम सभी को विदित है कि भारत की अस्मिता के प्रतीक हैं प्रभु राम जिनके स्मरण मात्र से भारत की सँस्कृति का परिचय आसानी से हो जाता है। कश्मीर से कन्याकुमारी, गुजरात से उतर पूर्व सभी स्थानों पर राम जी एवं उनसे जुड़े प्रतीकों को लोगों ने गढ़ा है।

कश्मीर जिसे कश्यप ऋषि द्वारा बसाया माना जाता है, वहीं तमिलनाडु में स्वयं राम के पदचिह्न हमें मिल जाते हैं। हम देखें कि हमारे उत्तरपूर्व में स्थित अरुणाचल प्रदेश की कवा जनजाति, असम की खरबीस जनजाति अपने को सुग्रीव का वंशज होने की बात करती है। वहीं अरुणाचल की ही आका जनजाति अपने को जामवन्त से जुड़ा मनाते हैं। मेघालय में खासी आंदोलन के नायक जेबन राय ने खासी में रामायण को लिखा और उसका मंचन कितने ही वर्षों से होता आ रहा है। वहीं पर खमटी जनजाति की अपनी ''खमटी रामायण'' उपलब्ध है, मिजोरम में खेमा एंड राम कथा में राम जी का वर्णन मिलता है। श्री रामजन्मभूमि पर बन रहा राम मंदिर अपनी भव्यता को शनैः–शनैः प्राप्त कर रहा है। वर्षों के संघर्ष एवं बलिदान के बाद अयोध्या में जन्मभूमि पर श्री राम जी का भव्य मंदिर बन रहा है, प्रत्येक दिन लाखों राम भक्त दर्शन को यहाँ पहुँच रहे हैं। अयोध्या में रहने वाले अयोध्यावासियों को इसका आर्थिक लाभ भी हो रहा है, एयरपोर्ट, होटल आदि के बनने से रोजगार के बहुत अवसर सृजित हो रहे हैं। इस सबके बावजूद कुछ लोग समाज को बाँटने का प्रयास कर रहे हैं।

(लेखक सहायक प्रोपेसर, तुलनात्मक राजनीति और राजनीतिक सिद्धांत का केन्द्र, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय ,नई दिल्ली।)

प्रेम, भक्ति, सद्भावना वाले हिन्दू धर्म को नफरती, हिंसक कहना राहुल गाँधी की बहुसँख्यक हिन्दुओं के प्रति घृणित भावना है - अरुण नेटके

भोपाल, 2 जुलाई 2024। राहुल गाँधी द्वारा संसद में हिन्दु धर्म का अपमान किया गया, उसके विरोध में सम्पूर्ण देश में आक्रोश है, इसी निमित्त भोपाल विभाग ने ज्योति टॉकीज चौराहे पर पुतला दहन और प्रदर्शन किया, जिसे संबोधित करते हुए श्री अरुण जी नेटके केन्द्रीय सह मंत्री विहिप ने कहा कि हिन्दू विरोधी राहुल गाँधी द्वारा हिन्दू धर्म को हिंसक, नफरती, झूठ बोलने वाला कह कर हिन्दू धर्म को अपमानित किया गया है।

संसद में जिम्मेदार, महत्वपूर्ण पदों पर बैठे लोगों द्वारा हिंदुत्व को हिंसा से जोड़ना अत्यंत दुर्भाग्यजनक है। हिंदुत्व चाहे विवेकानंद का हो या महात्मा गाँधी का वह सौहार्द व बंधुत्व का परिचायक है। हिंदुत्व के बारे में ऐसी प्रतिक्रिया ठीक नहीं है। लाखों सिक्खों का खून बहाने वाले परिवार का व्यक्ति, हिन्दू धर्म को हिंसक कह रहा

है। प्रेम, भक्ति सद्भावना वाले हिन्दू धर्म को नफरती, हिंसक कहना राहुल गाँधी की बहुसँख्यक हिन्दुओं के प्रति घृणित भावना है, हिन्दू समाज अब राहुल गाँधी को राहुल जिहादी कहना शुरू कर दे।

vhpmadhybharat@gmail.com

'श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के महामंत्री चम्पत राय का आधिकारिक वक्तव्य'

श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में वर्षाकाल के दौरान छत से पानी टपकने के तथ्य

1. गर्भगृह जहाँ भगवान रामलला विराजमान हैं, वहाँ एक भी बूँद पानी छत से नहीं टपका है और न ही कहीं से पानी गर्भगृह में प्रवेश हुआ है।

2. गर्भगृह के आगे पूर्व दिशा में मंडप है, इसे गूढ़मण्डप कहा जाता है, वहाँ मंदिर के द्वितीय तल की छत का कार्य पूर्ण होने के पश्चात (भूतल से लगभग ६० फीट ऊँचा) घुम्मट जुड़ेगा और मण्डप की छत बन्द हो जाएगी, इस मंडप का क्षेत्र ३५ फीट व्यास का है, जिसको अस्थायी रूप से प्रथम तल पर ही ढ़ंक कर दर्शन कराये जा रहे हैं, द्वितीय तल पर पिलर निर्माण कार्य चल रहा है।

3. रंग मंडप एवं गुढ़ मंडप के बीच दोनों तरफ (उत्तर एवं दक्षिण दिशा में) उपरी तलों पर जाने की सीढियाँ हैं, जिनकी छत भी द्वितीय तल की छत के ऊपर जाकर ढँकेगी। वह कार्य भी प्रगति पर है।

4. सामान्यतया पत्थरों से बनने वाले मंदिर में बिजली के कन्ड्युट एवं जंक्शन बॉक्स का कार्य पत्थर की छत के ऊपर होता है एवं कन्ड्युट को छत में छेद करके नीचे उतारा जाता है, जिससे मंदिर के भूतल के छत की लाइटिंग होती है। ये कन्ड्युट एवं जंक्शन बॉक्स ऊपर के फ्लोरिंग के दौरान वाटर टाईट करके सतह में छुपाईं जाती है।

चूंकि प्रथम तल पर बिजली, वाटर प्रूफिंग एवं फ्लोरिंग का कार्य प्रगति पर है, अतः सभी जंक्शन बॉक्सेज में पानी प्रवेश करा, वही पानी कंड्युट के सहारे भूतल पर गिरा। ऊपर देखने पर यह प्रतीत हो रहा था कि छत से पानी टपक रहा है। जबकि यथार्थ में पानी कंड्युट पाइप के सहारे भूतल पर निकल रहा था। उपरोक्त सभी कार्य शीघ्र पूरा हो जाएगा, प्रथम तल की फ्लोरिंग पूर्णतः वाटर टाइट हो जाएगी और किसी भी जंक्शन से पानी का प्रवेश नहीं होगा, फलस्वरूप कन्डयुट के जरिये पानी नीचे तल पर भी नहीं जाएगा।

5. मन्दिर एवं परकोटा परिसर में बरसात के पानी की निकासी का सुनियोजित तरीके से उत्तम प्रबंध किया गया है, जिसका कार्य भी प्रगति पर है, अतः मंदिर एवं परकोटा परिसर में कहीं भी जलभराव की स्थिति नहीं होगी। पूरे श्रीराम जन्मभूमि परिसर को बरसात के पानी के लिए बाहर शून्य वाटर डिस्चार्ज के लिए प्रबंधन किया गया है। श्री राम जन्म भूमि परिसर में बरसात के पानी को अन्दर ही पूर्ण रूप से रखने के लिए रिचार्ज पिटों का भी निर्माण कराया जा रहा है।

6. मन्दिर एवं परकोटा निर्माण कार्य तथा मन्दिर परिसर निर्माण/विकास कार्य भारत की दो अति प्रतिष्ठित कम्पनियों L & T तथा टाटा के इंजीनियरों एवं पत्थरों से मन्दिर निर्माण की अनेक पीढ़ियों की परम्परा के वर्तमान उत्तराधिकारी श्री चन्द्रकान्त सोमपुराजी के पुत्र आशीष सोमपुरा व अनुभवी शिल्पकारों की देखरेख में हो रहा है, अतः निर्माण कार्य की गुणवत्ता में कोई कमी नहीं है।

7. उत्तर भारत में (लोहा का उपयोग किए बिना) केवल पत्थरों से मन्दिर निर्माण कार्य (उत्तर भारतीय नागर शैली में) प्रथम बार हो रहा है, देश–विदेश में केवल स्वामी नारायण परम्परा के मंदिर पत्थरों से बने हैं, भगवान के विग्रह की स्थापना, दर्शन, पूजन और निर्माण कार्य केवल पत्थरों के मंदिर में संभव है, जानकारी के अभाव में मन विचलित हो रहा है।

8. प्राण प्रतिष्ठा दिवस के पश्चात लगभग एक लाख से एक लाख पन्द्रह हजार भक्त प्रतिदिन रामलला के बाल रूप के दर्शन कर रहे हैं, प्रातः ६.३० बजे से रात्रि ६.३० बजे तक दर्शन के लिए प्रवेश होता है, किसी भी भक्त को अधिक से अधिक एक घण्टा दर्शन के लिए प्रवेश, पैदल चलकर दर्शन करना, बाहर निकल कर प्रसाद लेने में लगता है, मन्दिर में मोबाइल ले जाना प्रतिबंधित है, मोबाइल का प्रयोग दर्शन में बाधक है, सुरक्षा के लिए घातक हो सकता है।

निवेदक : चम्पत राय (महामन्त्री श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र) दिनांक 26 जून 2024

जारी कर्ता–श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र संवाद केन्द्र अयोध्या धाम

राजमाता नायकी देवी गौरव दिवस समारोह

30 जून 2024, रविवार : गुजरात के पाटन में आयोजित राजमाता नायिका देवी गौरव दिवस समारोह में विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय सह संगठन मंत्री विनायक रावजी देशपांडे ने कहा कि राजमाता नायिका देवी के गौरव के निमित्त आज हम सब एकत्रित हुए हैं। विश्व हिंदू परिषद ने तय किया है कि यह जो हमारे पराक्रम के स्वर्णिम पृष्ठ हैं, वह लोगों के सामने आना चाहिए। सालार मसूद यानि मोहम्मद गजनी के भांजे को जिसने हराया, वह राजा सुहेलदेव लोगों को मालूम होने चाहिए। पुर्तगालियों को हराने वाली रानी ऐबक्का चौटा सबको मालूम होनी चाहिए। तैमूर लंग का पीछा करते हुए उसको परास्त करने वाली राम प्यारी गुर्जर सबको मालूम होने चाहिए। तमिलनाडु में अँग्रेजों को हराने वाली रानी वेलु नाचियार सबको मालूम होनी चाहिए। उसी कड़ी में मोहम्मद गौरी को पराभव का पहला घूंट पिलाने वाली रानी नायिका देवी की जानकारी भी सभी को मिलनी चाहिए।

जो फारसी बकरकर थे, जिन्हें फारसी में बकरा लिखा गया, डायसन ने उसका अँग्रेजी में अनुवाद किया है। उसके तीन वॉल्यूम में से एक वॉल्यूम में रानी नायकी देवी का उल्लेख है। उसका आधार लेकर डॉ. रामगोपाल मिश्रा जी ने लगभग 15 साल पहले अँग्रेजी में एक पुस्तक लिखी, अब उसका हिंदी में अनुवाद हो गया है। 14वीं सदी में एक बड़े जैन विद्वान मेरुतुंगजी ने ग्रंथ लिखा है 'प्रबंधचिंतामणि', उस ग्रंथ में रानी नायकी देवी के चरित्र का और मोहम्मद गौरी के साथ उनकी जो लड़ाई हुई, जिसमें उनकी विजय हुई, उसका सारा वर्णन है। चालुक्य राजघराने के राज्य कवि सोमेश्वर जी ने भी उसका उल्लेख किया है। 13वीं सदी में जो फारसी लेखक हुए सिराजुद्दीन सिराज उन्होंने भी अपने बखर में यह सारे युद्ध का वर्णन किया है, उनके बाद फरिश्ता ने भी किया है, बदायूं ने भी किया है।

अमेरिकन इतिहासकार टेट्रियल

चांडल ने कहा है कि 12वीं–13वीं सदी में दुनियाँ के जितने भी बड़े शहर थे, उसमें 10वें क्रम पर पाटन था। पाटन का काफी बड़ा महत्व है, रानी की वाव के कारण तो पाटन सारी दुनियाँ में प्रसिद्ध है अभी पाटन की प्रसिद्धी नायिका देवी के कारण और भी बढ़ने वाली है। यहाँ सोलंकी माने चालूक्य राज करते थे। सिद्धराज सोलंकी जी की जानकारी हम सबको है ही। रानी नायिका देवी वैसे गोवा से थी। गोवा में जो कदंब राजघराना था, उनका नाम था शिवकांत परमारदिन, उनकी वह बेटी थी। राजकन्या थी, बचपन में ही युद्ध कला में प्रवीण हो गई थी, घुड़सवारी करना, तलवार चलाना, तीरंदाजी करना यानी धनुष–बाण उपयोग करना सब चीजों में वह निपुण हो गई थी। राजकाज की भी प्राथमिक जानकारी उनके पिता ने उनको दी थी। उनकी शादी सिद्धराज जैसी का पोता और कुमारपाल का बेटा अजयपाल के साथ हुई। 1171 में अजयपाल जी पाटन के राजा बने, लेकिन दुर्भाग्य से 1175 में ही उनकी अकाल मृत्यु हो गई। तीन बच्चे थे, उसमें से बड़ी बेटी थी उसका नाम था कुर्मा देवी, जो बड़ा बेटा था उसका नाम था मूलराज द्वितीय और जो छोटा बेटा था उसका नाम था भीमदेव द्वितीय। उनकी मृत्यु के बाद राजा कौन बनेगा? सारे दरबारी मंत्री ने कहा (वह रानी की योग्यता को जानते थे) रानी माँ आपको ही इस राज्य को संभालना चाहिए, आप ही गद्दी पर बैठ जाइए। क्योंकि आज के राजघराने में आप ही सबसे योग्य हैं, क्योंकि आपको राजनीति, युद्ध कला व कूटनीति आती है, इसलिए आपको ही राजा बनना चाहिए। लेकिन रानी ने अत्यंत नम्रता पूर्वक कहा कि अपने राजघराने की यह पद्धति नहीं है। मैं जानती हूँ कि मूलराज अबोध बालक है, लेकिन वह युवराज है और बड़ा होने के कारण राजा वही बन सकता है। वही राजा बनेगा और मैं उसकी प्रतिनिधि बनकर, राजमाता बनकर, सारा राज काज देखूंगी, जब तक वह बड़ा होता है तब तक। उस वक्त जो चालुक्य का राज्य था, उसमें गुजरात का कुछ हिस्सा और सिरोही, जालौर जैसे राजस्थान के कुछ जिले मिलकर चालुक्य वंश यानी सोलंकी वंश का राज्य बनता था। अत्यंत संपन्न था धन–धान्य से, सारी प्रजा सुखी थी।

मोहम्मद गौरी ने 1175 में मुल्तान जीता, जो आज पाकिस्तान में है, बाद में भारत पर आक्रमण करने का सोचा। मोहम्मद गजनी उसका आदर्श था, उसने सोचा मैं भी हिंदुस्तान पर आक्रमण करूंगा। मौके की तलाश में था और अपने जासूसों द्वारा जानकारी एकत्र कर रहा था कि कहाँ करना, कैसे करना। तब उसके पास समाचार आ गया कि गुजरात में चालुक्य वंश का जो राजा है, वह अबोध बालक है और उसकी माता है राजमाता नायिका देवी, वह राज–काज संभाल रही है, लेकिन वह एक विधवा है, अबला है, महिला है। इसलिए कोई दिक्कत नहीं, इसलिए उसने सोचा कि यही एक मौका है। चालूक्यों का राज्य हम आसानी से जीत सकते हैं और उसके बाद समग्र भारत पर आक्रमण की योजना बना सकते हैं, ऐसा दीवास्वप्न वह सब देख रहे थे। फिर वह मुल्तान से आगे आया और आज के पाकिस्तान के दक्षिण तरफ कच्छ नाम का एक क्षेत्र है, वहाँ आ गया और उसके बाद इंदौर, राजस्थान का रेगिस्तान पार करके, वह चालुक्य की

सीमा के पास पहुँच गया। और वहाँ पहुँचने के बाद उसने चालूक्यों की राजमाता के पास अपना एक दूत भेजा एक पत्र लेकर, उस पत्र में जो लिखा गया था कि मैं यहाँ आया हूँ, आक्रमण करना चाहता हूँ, लेकिन मैं आक्रमण नहीं करूंगा, अगर आप मेरी शर्त मान लेते हैं तो। उसने शर्त रखी की रानी, राजा और उसके बेटे उसे सौंप दिए जाएँ। आपकी सारी धन दौलत और यहाँ की सारी महिलाएँ, कन्याएँ वह भी मुझे दे दो। फिर मैं आपके वहाँ आक्रमण नहीं करूंगा और आप सभी पर रहम करूंगा और किसी को मारूंगा नहीं। दरबार में खलबली मच गई, लेकिन राजमाता जानती थी, राजमाता का जो गुप्तचर दल था, उसका नाम था शारडंग। वह अत्यंत कुशल थे, उन्होंने सारी जानकारी जुटाई थी कि उसका क्या मंसूबा है, कितनी सेना है। उन्होंने कहा उनकी विशाल सेना है और उनके पास आधुनिक शस्त्र है। हमारा और उनका मुकाबला हो नहीं सकता, क्योंकि वह हमारे से कई गुना बड़े हैं। तो रानी ने विचार किया कि आमने–सामने की लड़ाई में तो हम हार जाएंगे, इसीलिए कूटनीति से ही इसको परास्त करना चाहिए। षठम् प्रति षाठ्यम्, टीट फॉर टैट। रानी ने उसके दूत के पास अपना उत्तर भेजा और लिखा कि आपकी सारी शर्ते हमें मान्य है। वह पत्र पढ़ कर मोहम्मद गौरी खुश हुआ, वहाँ जश्न मनाने की तैयारी शुरू हो गई।

यहाँ रानी ने अपनी योजना बनानी शुरू कर दी। रानी के जासूसों ने जब उनको समाचार दिया था कि मोहम्मद गौरी आने वाला है, इस समय उन्होंने पास–पड़ोस के सभी राजाओं को पत्र भेजे थे। कहा था कि गिद्ध आने वाला है, हम सबको खाने के लिए, उसको परास्त करना है, मैं आगे आऊंगी, आप सब भी मेरे साथ रहें। उस समय जालौर के कीर्तिमान चौहान थे और नाडोल के कल्याण चौहान थे, अर्बुदा के परमार थे, इन तीन राजाओं ने सकारात्मक जवाब दिया। कहा हम आपको सब प्रकार की मदद करने को तैयार हैं। रानी ने अपने प्रधानमंत्री और मंत्रियों से कहा कि अपने राज्य से जो एक गुप्त मार्ग जाता है नाडोल में कल्याण देव जी के वहाँ उस मार्ग से सभी महिलाएँ, बच्चे और वरिष्ठ नागरिकों को ले जाएँ। फिर उन्होंने सेनापति से बात कर 200 अत्यंत कुशल सैनिकों की मांग रखी। तब मोहम्मद गौरी की छावनी राजस्थान की ओर आबू पर्वत के पास गड़राघाट इलाके में क्यादारा नाम के गाँव, जिसे कासोदरा भी कहते हैं, वहाँ थी। रानी ने कहा कि इन 200 सैनिकों को वेश बदलकर गुप्त तरीके से वहीं रहना है। दूसरा उन्होंने सेनापति को कहा कि अपनी 25000 की सेना को कई टुकड़ों में बाँटनी है और आबू पर्वत में छिपकर, मोहम्मद गौरी की सेना की छावनी को हमें घेरना है। तीसरी बात रानी ने कही कि कुछ सैनिकों को लेकर मैं आगे जाऊंगी, क्योंकि मोहम्मद को कहा है कि मैं स्वाधिन होने आउंगी। तो वह तो मुझे दिखावा करना होगा और आप मेरे से थोड़ी दूरी रखें। अपनी गज सेना, अश्व सेना और अन्य सैनिकों के साथ रहेंगे। इस तरह रानी ने रणनीति तैयार कर के सारे लोगों को अपनी–अपनी जगह पर रवाना कर दिया।

मोहम्मद गौरी जश्न मना रहा था। समय पाकर राजा मूलराज को अपनी पीठ पर कस के बांध कर रानी घोड़े पर सवार हो गई। घोड़ा लेकर जब रानी मोहम्मद की छावनी में जाने लगी, तब उसे पता नहीं था कि रानी की क्या योजना है। जब रानी उसकी छावनी के पास आई, तब उसके सैनिकों ने बताया कि रानी आ रही है। वह भी छावनी के बाहर आ गया। अचानक रानी रुक गई और मोहम्मद गौरी सोचने लगा कि वह क्यों रुक गई। तभी अचानक उसकी छावनी से हर–हर महादेव का नारा लगा और छुपे हुए 200 सैनिक टूट पड़े। आवाज सुनकर पहाड़ों में टुकड़ियों में बंट कर छुपे रानी के सैनिकों ने भी आक्रमण कर दिया। रानी ने भी नेतृत्व लेकर अचानक हमला किया और पीछे से आ रही गज सेना और अश्व सेना भी वहीं पहुँच गई। मोहम्मद गौरी कुछ नहीं समझ पाया। आनन–फानन में उसने सेना एकत्र की और युद्ध करने लगा, इस स्थिति में पहले आक्रमण करने वाला ही विजयी होता है। मोहम्मद की सेना में अफरा–तफरी मच गई और गाजर मूली की तरह उसके सैनिक कटने लगे। रानी जबरदस्त पराक्रमी थी। मोहम्मद के आसपास बना सुरक्षा घेरा तोड़कर, सैनिकों को मारकर, रानी मोहम्मद के पास पहुँच गई और जोर से मोहम्मद गौरी पर वार किया। घोड़े पर बैठा मोहम्मद गौरी बेहोश होकर नीचे गिर गया। अचानक मोहम्मद गौरी के और सैनिक आ गए और उसे लेकर भाग गए। उसको खत्म करने का मौका रानी को नहीं मिला। जब रानी की गज सेना आई, तो कैसे गज सेना से लड़ना, वह भी उसके सैनिक नहीं जानते थे और वह युद्ध हम बहुत ही अच्छे ढंग से जीत गए। यह घटना है 1178 की। बाद में मोहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज चौहान को हराया, सियालकोट जीता, वह अलग बात है। राजमाता उस वक्त एक उत्कृष्ट सेनापति थी और इस तरह उन्होंने अपने रणनीति का जबरदस्त परिचय दिया। उसके 100 साल बाद भी गुजरात पर आक्रमण नहीं हुआ। गुजरात पर आक्रमण हुआ 1299 में, वह अलाउद्दीन खिलजी ने किया।

ऐसे छिपे हुए गौरवशाली इतिहास को सबसे के सामने लाकर हिंदू समाज में पराक्रम का निर्माण करना यह विश्व हिंदू परिषद का उद्देश्य है। पिछले साल हम जब मुख्यमंत्री जी को मिलने गए थे, तब यह सभी चर्चा उनसे की और उनके सामने कुछ मांगे भी रखी। हमने पहली मांग की... पाटन में इस ऐतिहासिक विजय का स्मारक बनना चाहिए... कर्णावती में भी राजमाता नायिका देवी का पुतला बनना चाहिए... राजस्थान और गुजरात की सीमा पर दोनों राज्य सरकारों को बात कर के, जहाँ यह ऐतिहासिक लड़ाई हुई, वहाँ उसका स्मारक बनाना चाहिए.... चौथी मांग है कि गुजरात के पाठ्य पुस्तकों में राजमाता नायिका देवी और इस लड़ाई की बात आनी चाहिए.... और पांचवी मांग है कि कन्याओं में वीरवृत्ति के निर्माण की आवश्यकता है, इसीलिए राजमाता नायिका देवी के नाम से कन्याओं के लिए सैनिक स्कूल का निर्माण भी होना चाहिए...इससे सभी पीढ़ियों को इनका स्मरण रहेगा और प्रेरणा मिलती रहेगी।

प्रेषक : प्रो. मितेष जायसवाल
प्रांत प्रचार–प्रसार प्रमुख, उत्तर गुजरात

डॉ. आनंद मोहन
सहयोगी - डॉ. अग्रताबेन वधेल, सबरीन बशीर, डॉ. आकांक्षा शुक्ला, आलोक मोहन

रक्षा सूत्र (कलावा) का महत्व अध्यात्म से विज्ञान तक

रक्षा सूत्र, जिसे कलावा के नाम से भी जाना जाता है, हिंदू सँस्कृति में धार्मिक समारोहों और शुभ अवसरों के दौरान कलाई पर बंधा एक पवित्र धागा है। यह प्राचीन प्रथा सुरक्षा का प्रतीक है और व्यक्तियों के बीच एक पवित्र बंधन का प्रतिनिधित्व करता है। यह परंपरा तब से चली आ रही है, जब भगवान विष्णु के अवतार वामन ने राजा बलि को अमरता प्रदान करने के लिए उनकी कलाई पर एक धागा बांधा था। आज, रक्षा सूत्र हिंदू अनुष्ठानों में अत्यधिक महत्व रखता है और माना जाता है कि यह पहनने वाले को नकारात्मक शक्तियों से बचाता है। रक्षा सूत्र बांधने की जड़ों का पता प्राचीन हिंदू शास्त्रों और पौराणिक कथाओं से लगाया जा सकता है। इस प्रथा से जुड़ी सबसे प्रमुख कहानियों में से एक भगवान वामन और राजा बलि की है। इस कथा में, भगवान विष्णु के पांचवें अवतार वामन ने राजा बलि को अमरता का आशीर्वाद देने के लिए उनकी कलाई पर एक पवित्र धागा बांधा था। यह अधिनियम न केवल दैवीय सुरक्षा का प्रतीक था, बल्कि रक्षा सूत्र को सुरक्षा और दिव्य आशीर्वाद के एक शक्तिशाली प्रतीक के रूप में भी स्थापित करता है।

रक्षा सूत्र पारंपरिक रूप से कच्चे धागे से बना होता है और लाल, पीला या हरा हो सकता है, जिसमें लाल रंग को सबसे शुभ रंग माना जाता है। लाल धागा, जिसे लाल धागा या मौली के रूप में भी जाना जाता है, विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। लाल रंग, आग और रक्त का प्रतीक है, जो ऊर्जा, शक्ति और दृढ़ संकल्प से जुड़े हैं। माना जाता है कि इस लाल धागे को बांधने से पहनने वाले में इन गुणों का आह्वान होता है, जिससे उन्हें बाधाओं को दूर करने के लिए आवश्यक शक्ति और जीवन मिलता है। धार्मिक समारोहों के दौरान, रक्षा सूत्र को अपनी सुरक्षात्मक शक्तियों को बढ़ाने के लिए विशिष्ट अनुष्ठानों और मंत्रों के साथ बांधा जाता है। पुरुष और अविवाहित लड़कियाँ आमतौर पर इसे अपनी दाहिनी कलाई पर पहनती हैं, जबकि विवाहित महिलाएँ इसे अपनी बाईं कलाई पर पहनती हैं। धागे को कलाई के चारों ओर तीन बार लपेटा जाता है, जो देवताओं (ब्रह्मा, विष्णु और शिव) और देवी (सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा) की दिव्य त्रिमूर्ति का प्रतीक है। यह तिगुना बंधन इन देवताओं के आशीर्वाद और सुरक्षा का प्रतिनिधित्व करता है, जो नुकसान के खिलाफ एक व्यापक ढाल प्रदान करता है।

आध्यात्मिक और स्वास्थ्य लाभ

रक्षा सूत्र पहनना न केवल एक आध्यात्मिक कार्य है, बल्कि माना जाता है कि इसके कई स्वास्थ्य लाभ भी हैं। ऐसा कहा जाता है कि यह मधुमेह, हृदय की समस्याओं, रक्तचाप के मुद्दों और यहाँ तक कि पक्षाघात जैसी बीमारियों से बचाता है। धागे की पवित्रता, इसके बांधने के दौरान जप किए गए मंत्रों की शक्ति के साथ मिलकर, पहनने वाले के चारों ओर एक सकारात्मक आभा प्रदान करता है, जिससे शारीरिक और मानसिक दोनों तरह की भलाई को बढ़ावा मिलता है। रक्षा सूत्र बांधने के लिए विशिष्ट दिन और अवसर सबसे

शुभ माने जाते हैं। उदाहरण के लिए, अनंत चतुर्दर्शी पर इसे पहनने से भगवान विष्णु से आशीर्वाद मिलता है और पहनने वाले को बुरी नजर से बचाया जाता है। इसी तरह, मंगलवार या शनिवार को धागा बांधना अत्यधिक लाभकारी माना जाता है। रक्षा सूत्र को कम से कम 40 दिनों के लिए पहनने की सलाह दी जाती है, ताकि इसकी सुरक्षात्मक शक्तियाँ पूरी तरह से प्रकट हो सकें।

'मौली' शब्द का अनुवाद "सबसे ऊपर" है, जो हिंदू संस्कृति में सिर के सर्वोच्च महत्व को दर्शाता है। लाल धागा, जिसे मौली के नाम से जाना जाता है, यह सर्वोच्च सुरक्षात्मक शक्ति का प्रतीक है। यह अभ्यास इस विश्वास को रेखांकित करता है कि रक्षा सूत्र एक ढाल के रूप में कार्य करता है, व्यक्ति को नकारात्मक प्रभावों और बुरी ताकतों से बचाता है। रक्षा सूत्र रक्षा बंधन के त्योहार में भी एक केंद्रीय भूमिका निभाता है, जहाँ बहनें अपने भाइयों की कलाई पर राखी (रक्षा सूत्र का एक रूप) बांधती हैं। यह अधिनियम बहन के प्यार और अपने भाई की सुरक्षा के लिए प्रार्थना का प्रतीक है, और बदले में भाई जीवन भर उसकी रक्षा करने की कसम खाता है। यह अनुष्ठान पारिवारिक बंधनों को मजबूत करने और आपसी देखभाल और सुरक्षा पर जोर देने में धागे की भूमिका पर प्रकाश डालता है।

रक्षा सूत्र का वैज्ञानिक महत्व

कलाई की कई महत्वपूर्ण नसें सीधे दिल से जुड़ती हैं। पारंपरिक मान्यताओं के अनुसार 4 चौथी उंगली के माध्यम से नसें हृदय से जुड़ती हैं। इस प्रकार कलावा या लाल धागा बांधने से आपको इन नसों को नियंत्रित करने में मदद मिलती है। यह त्रिदोष को दूर करने में भी मदद कर सकता है। इसके अलावा मौली या कलावा को कलाई पर बांधने से स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं जैसे ब्लड प्रेशर, डायबिटीज, हृदय रोग और लकवा से राहत दिलाने में फायदा होता है। सफेद धागे को हल्दी में डुबोकर पीले धागे के लिए धूप में सुखाया जाता है, जबकि लाल धागे के लिए इसे कुंकुम में डुबोया जाता है और दोनों में एंटीबायोटिक गुण और अन्य लाभकारी गुण होते हैं। जब भी लोग हाथ धोते हैं, क्योंकि हल्दी धागे से बाहर आती है, यह कीटाणुओं को मारती है। रक्षा सूत्र, या कलावा, हिंदू सँस्कृति में एक गहरा प्रतीक है, जो सुरक्षा, शक्ति और दिव्य आशीर्वाद का प्रतिनिधित्व करता है। इसकी ऐतिहासिक जड़ें, आध्यात्मिक महत्व और संबंधित अनुष्ठान धार्मिक समारोहों और दैनिक जीवन में इसके महत्व को रेखांकित करते हैं। इस पवित्र धागे को बांधकर, व्यक्ति न केवल दैवीय सुरक्षा चाहते हैं, बल्कि अपनी साँस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत से अपने संबंध को भी मजबूत करते हैं। रक्षा सूत्र, अपने समृद्ध प्रतीकवाद और कई गुना लाभों के साथ, एक पोषित परंपरा बनी हुई है, जो इसे पहनने वालों की रक्षा और आशीर्वाद देती है।

बजरंग दल द्वारा चलाया गया सेवा सप्ताह

दक्षिण बिहार। केंद्रीय कार्यक्रम सेवा सप्ताह के अंतर्गत बजरंग दल द्वारा दक्षिण बिहार के अनेक जिलों में मेडिकल कैम्प, मंदिर सफाई व वृक्षारोपण जैसे कार्यक्रम किये गए। कार्यक्रम की जानकारी देते हुए बजरंग दल के प्रांत संयोजक रजनीश कुमार ने बताया कि बजरंग दल के द्वारा हजारों की सँख्या में वृक्षारोपण किया गया। साथ ही पर्यावरण शुद्ध बना रहे, इसके लिए जागरूकता अभियान भी चलाया गया है ।

झुग्गी झोपड़ी बस्तियों में बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने योग्य डॉक्टर व निःशुल्क दवा के द्वारा वहाँ रहने वाले बंधु/भगिनी की सेवा की। इस कार्यक्रम के द्वारा समाज के युवा वर्ग में खास उत्साह देखने को मिल रहा है।

chitranjan1964@gmail.com

नाभि खिसकना

नाभि टलना, नल-नर होना, धरण डिगना, अलग-अलग क्षेत्रों में इस समस्या को अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है...

इस समस्या के कारण पाचन संबंधी व अन्य कई विकार बने रहते हैं, लाख कोशिशों के बावजूद भी इन विकारों को काबू करना मुश्किल रहता है, जब तक कि नाभि अपने स्थान पर वापिस ना आ जाए...

क्या है नाभि टलना...?

वस्तुतः हम सभी की नाभि के बीचों–बीच हृदय–स्पंदन (धड़कन) महसूस की जानी चाहिए, कई कारणों से यह अपने स्थान से खिसक जाती है एवं फिर धड़कन इधर–उधर महसूस की जाती है।

नाभि का टलना कैसे चेक करें...?

नाभि अपने स्थान पर है या नहीं यह सीधे खड़े होकर यदि दोनों हाथों की कनिष्ठा (सबसे छोटी उंगली) छोटी–बड़ी है या समतल जगह लेटने पर दोनों पैरो के अंगूठे छोटे–बड़े हैं, तो नाभि अपने स्थान से खिसकी हुई है...

दूसरा – चटाई इत्यादि लेकर समतल जगह पर रोगी सीधे लेटें, एक धागा लेवें, नाभि के मध्य से दोनों निप्पल्स (स्तन) की दूरी दूसरे व्यक्ति से नापने को कहें, यदि यह दूरी कम ज्यादा है तो नाभि अपने स्थान पर नहीं है।

तीसरा– चटाई इत्यादि लेकर समतल जगह पर रोगी सीधे लेटें, दूसरे व्यक्ति को नाभि के बीचों–बीच उंगलीयों के माध्यम से दवाब देकर धड़कन (हृदय स्पंदन) चेक करने को कहें, यदि धड़कन बीचों–बीच की इधर–उधर मिल रही है तो नाभि टली हुई है।

वापिस अपने स्थान पर नाभि को कैसे लावें...?

पेट को हल्का दवाब देकर चेक करें, क्या यह दुखता है एवं क्या सख्त है...? यदि दुखना और सख्त होना नहीं है तो सुबह खाली पेट (फ्रेश होने के बाद) समतल जगह पर लेटें, लेटकर बर्फ का कटोरा नाभि पर रखें, बर्दाश्त होने तक रखा रहने देवें।

यदि पेट सख्त है तो... रात को सोते समय इस प्रकार की रोटी बनवाएँ जो एक तरफ से कच्ची हो, अर्थात एक तरफ अग्नि पर पकाई ना गई हो, उस रोटी में कच्ची वाली तरफ सरसों या तिल तेल उपलब्धता अनुसार लगावें व वह रोटी नाभि को सेंटर में रखकर किसी पुराने कपड़े से पेट पर बाँध लेवें, सुबह खोल देवें, दो से छः रातों तक पेट मुलायम होने तक यह प्रक्रिया करें, पेट मुलायम होने पर सुबह खाली पेट (फ्रेश होने के बाद) समतल जगह पर सीधा लेटें, लेटकर बर्फ का कटोरा नाभि पर रखें, बर्दाश्त होने तक रखा रहने देवें... (1 से 4 दिन आवश्यकतानुसार यह प्रक्रिया दोहरावें जब तक नाभि स्थान पर ना आ जावे)।

(उपरोक्त के अलावा भिन्न–भिन्न जगहों पर भिन्न लोग भिन्न प्रकार से नाभि सेट करते हैं, योगासन वगैरह की भी मदद ली जाती है, उपरोक्त विधि सरल है व आप स्वयं कर सकते हैं)

नाभि जल्दी से ना टले इसके लिए नाभि अपने स्थान पर सेट होने के बाद काला धागा (ताबीज वाला) दोंनो पैरों के अंगूठों में बाँध लेवें, कई लोग धागे की बजाय चाँदी या लोहे के छल्ले भी पैरों के अंगूठों में डलवा लेते हैं।

- अधिक वजन उठाने से बचें, यदि उठाना पड़े तो झटके से ना उठावें
- सुबह ज्यादा देर खाली पेट ना रहें.
- ऊँचे–नीचे में पैर पड़ने व झटका लगने से बचें... सुपाच्य भोजन करें.
- प्रतिदिन नाभि में एरंड तैल सरसों तेल, घी, पंचगव्य इत्यादि लगावें.

हिंदू हेरिटेज सैंटर रोटोरुआ में दसवां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस सम्पन्न

न्यूजीलैंड में भारतीय उच्चायोग के सहयोग से 22 जून 2024 को रोटोरुआ के हिंदू हेरिटेज सेंटर में 10वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। इस वर्ष की थीम 'स्वयं और समाज के लिए योग' ने व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण दोनों को बढ़ावा देने में योग की दोहरी भूमिका पर जोर दिया। इस कार्यक्रम में माओरी, इतालवी, जर्मन, अमेरिकी, स्पेनिश, दक्षिण अफ्रीकी, भारतीय और फिजियन समुदायों सहित विविध साँस्कृतिक पृष्ठभूमि के प्रतिभागियों ने योग को एक एकीकृत शक्ति के रूप में प्रदर्शित किया। यह उत्सव हेल्थ फॉर ह्यूमैनिटी योगाथॉन का हिस्सा था, जो 12 जून से 26 जून तक न्यूजीलैंड के कई शहरों में चलता है, जो सभी को योग सीखने, भाग लेने और अपने दैनिक जीवन में योग को शामिल करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

सूर्य नमस्कार के अलावा इस कार्यक्रम में विभिन्न योग अभ्यास, ध्यान सत्र, मंत्र जप, भक्ति संगीत और न्यूजीलैंड भर के विशेषज्ञों की बातचीत शामिल थी। 2011 से प्रतिवर्ष आयोजित किया जाने वाला हेल्थ फॉर ह्यूमैनिटी योगाथॉन न्यूजीलैंड में बड़े पैमाने पर योग को बढ़ावा देता है, जिसका ध्यान योग स्कूलों, रिट्रीट, जिम और सामुदायिक संगठनों तक पहुँचने और योग को पढ़ाने और बढ़ावा देने में उनके योगदान को स्वीकार करने पर है। हिंदू हेरिटेज सेंटर में इस वर्ष के अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का नेतृत्व रोटोरुआ की प्रसिद्ध योगाचार्य मां आनंद कलादेवी ने किया। प्रतिभागियों ने योग मुद्राओं की एक श्रृंखला में भाग लिया, जिसमें शारीरिक शक्ति, मानसिक शांति और आध्यात्मिक कल्याण के लिए योग के समग्र लाभों पर प्रकाश डाला गया। माँ कलादेवी के गहन ज्ञान और शांत उपस्थिति ने उपस्थित लोगों को प्रेरित किया, जिससे सत्र प्रभावशाली और यादगार बन गया।

सत्र का समापन हेल्थ फॉर ह्यूमैनिटी योगाथॉन की रोटोरुआ समन्वयक मोनिका बंसल द्वारा संचालित सूर्य नमस्कार अनुक्रम के साथ हुआ। इस एक दिवसीय कार्यक्रम का उद्देश्य समुदाय को घर, स्कूलों और कार्यस्थलों पर योग सीखने और अभ्यास करने के लिए प्रेरित करना है।

समुदाय की उत्साही भागीदारी पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए माँ आनंद कलादेवी ने टिप्पणी की, ''इस अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम ने लोगों के लिए शरीर, मन और आत्मा के बीच संबंधों का पता लगाने का एक अद्भुत अवसर पैदा किया। विशेषकर हिंदू हेरिटेज सेंटर में हमने जो मतदान और सहभागिता देखी, वह वास्तव में उत्साहवर्धक थी।''

न्यूजीलैंड की हिंदू परिषद के अध्यक्ष डॉ. गुना मैगेसन ने सभी को उनकी उत्साही भागीदारी के लिए धन्यवाद दिया। प्रतिभागियों को कार्यक्रम के बाद भी अपना योग अभ्यास जारी रखने और हैशटैग #YogathonNZ का उपयोग करके सोशल मीडिया पर अपने अनुभव और सूर्य नमस्कार की गिनती साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। रोटोरुआ योगाथॉन आयोजनों के बारे में अधिक जानकारी और अपडेट फेसबुक पेज #YogathonNZ पर पाया जा सकता है।

न्यूजीलैंड की हिंदू परिषद उन सभी को हार्दिक धन्यवाद देती है, जिन्होंने इस कार्यक्रम में भाग लिया और समर्थन किया, जिससे यह एक शानदार सफलता बन गई। हम आने वाले वर्षों में स्वास्थ्य और मानवता की इस यात्रा को जारी रखने के लिए तत्पर हैं।

hindu.nz@gmail.com

विश्व हिंदू परिषद द्वारा सर्व समाज प्रतिभा सम्मान कार्यक्रम
भारत को विश्व गुरु बनाना है : अरुण नेटके

अशोकनगर। विश्व हिंदू परिषद द्वारा सर्व समाज प्रतिभा सम्मान मानस भवन में रखा गया, जिसमें मुख्य अतिथि विहिप केंद्रीय सहमंत्री अरुण जी नेटके, अध्यक्षता करण सिंह पंथी, प्रदेश सचिव एवं जिला अध्यक्ष कोरी समाज पूज्य संत चरण विष्णु दास जी महाराज लहर घाट आश्रम, प्रांत धर्म प्रसार प्रमुख डॉ. दीपक मिश्रा, बजरंग दल प्रांत सह संयोजक अवधेश तिवारी, विभाग मंत्री सुरेश जी शर्मा, जिला अध्यक्ष दिनेश जैन की आतिथ्य में शुभारंभ किया गया। अतिथियों द्वारा भगवान राम का पूजन एवं महात्मा ज्योतिबा फुले, डॉ. भीमराव अंबेडकर जी के चित्र पर माल्यार्पण किया। अतिथियों का मंगल तिलक लगाकर स्वागत किया गया। स्वागत भाषण कार्यक्रम की रूपरेखा धर्मप्रसार प्रमुख डॉ. दीपक मिश्रा ने रखते हुए कहा कि विश्व हिंदू परिषद हिंदू समाज में समरसता के लिए संकल्पित है। हिंदू परिषद द्वारा 44 समाज के लोगों को आमंत्रण किया गया था, जिसमें 33 समाज के प्रतिनिधि उपस्थित हुए। विश्व हिंदू परिषद ने समाज के आधार पर प्रतिशत तय किया, जिस समाज में जिसका प्रतिशत सर्वश्रेष्ठ है, ऐसे प्रथम,

द्वितीय, तृतीय छात्रों को चयनित किया। इस प्रकार से 33 समाज के 187 छात्रों ने भाग लिया, सभी को प्रमाण पत्र, शील्ड, पाटिका पहनकर स्वागत किया गया।

विहिप केंद्रीय सह मंत्री अरुण जी नेटके ने कहा कि हमारे देश का युवा हमेशा से ही राष्ट्र को समर्पित रहा है। युवा पीढ़ी को आगे जाना है। रोटी, कपड़ा, मकान, व्यवसाय, नौकरी के साथ राष्ट्र का चिंतन करते हुए रहना है। हमारा इतिहास रहा है कि हम हमेशा से राष्ट्र के लिए, समाज के लिए समर्पण करते रहे हैं, इसलिए भारत को विश्व गुरु बनाना है, तो प्रत्येक समाज को ऊँच–नीच, जात–पात को छोड़कर राष्ट्र में चिंतन करते हुए एक साथ खड़ा होना होगा। हिंदू हम सब एक हैं, इस प्रकार सभी को संकल्प दिलाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कोरी समाज के अध्यक्ष करण सिंह पंथी ने कहा कि हम सभी भारत माँ की संतान हैं और एक हैं। संचालन बजरंग दल सह संयोजक अवधेश तिवारी ने किया। अतिथियों का स्वागत विकास जैन बल्ली, हेमराज नामदेव, दुर्गावाहनी अंजना दुबे, मातृशक्ति से संतोष चंदेल, ज्ञानेश्वरी सक्सेना ने किया। आभार जिला अध्यक्ष दिनेश जैन ने किया।

deepakmishravhp@gmail.com

हैदराबाद के सांसद असदुद्दीन ओवैसी द्वारा संसद के भीतर जय फिलस्तीन के नारे लगाने के विरोध में जंतर मंतर पर विरोध प्रदर्शन

नई दिल्ली, 30 जून। विश्व हिंदू परिषद ने आज हैदराबाद के सांसद असदुद्दीन ओवैसी की ओर से संसद के भीतर जय फिलस्तीन के नारे की कड़ी निंदा करते हुए ओवैसी के खिलाफ जंतर मंतर पर विरोध प्रदर्शन किया। इस विरोध प्रदर्शन की अगुवाई विहिप की युवा इकाई बजरंग दल ने की, जिसमें विहिप के कई आयामों के कार्यकर्ताओं ने बड़ी सँख्या में भाग लिया। विहिप के इंद्रप्रस्थ प्रांत मंत्री श्री सुरेंद्र गुप्ता ने कहा कि ओवैसी ने सांसद पद की शपथ लेते समय संसद के भीतर एक पराए देश फिलिस्तीन के प्रति आस्था प्रदर्शित की, जबकि इसके पहले अन्य मौकों पर भारत की जय नहीं कहा, जो घोर निंदनीय है। उन्होंने कहा कि ओवैसी की ओर से संसद में कहे शब्द संविधान का अपमान है और यह राष्ट्रद्रोह की श्रेणी में आता है।

श्री गुप्ता ने कहा कि ओवैसी हमेशा विभाजनकारी वक्तव्य देते हैं और इस बार फिलिस्तीन की जय बोलकर वह देश के मुसलमानों को भड़काने और उन्हें आक्रोशित करने का षडयंत्र रच रहे हैं। यह देश को बांटने वाली खतरनाक प्रवृत्ति है, जिसके चलते ही देश का विभाजन हुआ था। दुःखद यह है कि ओवैसी सांसद हैं, जिनके लिए संविधान और देश सर्वोच्च होना चाहिए, लेकिन उनके लिए अपनी राजनीति ज्यादा महत्वपूर्ण है। यह देश बांटने वाली राजनीति अब स्वीकार्य नहीं होगी। श्री गुप्ता ने कहा कि इस मामले को लेकर उनकी संसद सदस्यता को अयोग्य ठहराने को लेकर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला से शिकायत की गई है। साथ ही ओवैसी की सदस्यता रद्द करने की मांग को लेकर विहिप अपने विरोध को जारी रखते हुए इस मांग को पूरा करने के लिए कानूनी और न्यायिक विकल्पों पर भी विचार कर रही है।

न्यूजीलैंड के हिंदू समुदाय को उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया

हिंदू काउंसिल ऑफ न्यूजीलैंड (HCNZ) और हिंदू यूथ न्यूजीलैंड (HCNZ) के दसवें वार्षिक इंडियन न्यूजलिंक स्पोर्ट्स में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया। इस सप्ताह की शुरुआत में समुदाय, कला और सँस्कृति पुरस्कार 2024 का सम्मानित पुरस्कार समारोह, पापाटोएटो, ऑकलैंड में ISSO स्वामी नारायण कॉम्प्लेक्स में आयोजित किया गया। विभिन्न जातीय पृष्ठभूमि वाले व्यक्तियों और संगठनों की उपलब्धियाँ भारतीय/भारतीय उपमहाद्वीप में योगदान का जश्न मनाता है।

इस वर्ष खेल जैसी श्रेणियों में लगभग 80 पुरस्कार सामुदायिक सेवा, कला और सँस्कृति सहित प्रदान किया गए। यह कार्यक्रम उत्कृष्टता का एक जीवंत उत्सव था, जिसमें साँस्कृतिक विविधता, प्रतिष्ठित अतिथियों और समुदाय के सदस्यों ने भाग लिया।

हिंदू समुदाय के दो प्रमुख नेता, प्रोफेसर गुना मगेसन और श्री मुरली कृष्ण मैगेसन को उनकी असाधारण सेवा और नेतृत्व के लिए पहचाना गया। प्रोफेसर गुना मैगेसन के नेतृत्व में न्यूजीलैंड की हिंदू परिषद ने प्रतिष्ठा प्राप्त किया। विभिन्न योगदानों के लिए रमन (रे) रणछोड़ विशेष स्मारक पुरस्कार न्यूजीलैंड में समुदाय, राष्ट्रीय हिंदू सहित कई पहलों के माध्यम से सम्मेलन, हिंदू–माओरी सम्पन्न हुई। भारत में माओरी और हिंदू नेताओं के प्रतिनिधिमंडल, वार्षिक मारा प्रवास, अनूठे माओरी और मातरिकी जैसे हिंदू त्योहारों का बड़े पैमाने पर उत्सव रक्षा बंधन, न्यूजीलैंड की हिंदू परिषद ने सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण योगदान दिया है। न्यूजीलैंड का कपड़ा, परिषद योग पर शैक्षिक कार्यक्रम और कार्यशालाएँ भी प्रदान करती है।

आध्यात्मिकता और मानसिक स्वास्थ्य से ध्यान और अन्य धर्मार्थ गतिविधियाँ होती हैं। यह पुरस्कार समुदाय की सेवा के प्रति चल रही प्रतिबद्धता और उसके योगदान पर व्यापक न्यूजीलैंड समाज प्रकाश डालता है। न्यूजीलैंड में युवाओं को उनकी सेवाओं के लिए सामुदायिक पुरस्कार श्री मुरली कृष्ण मगेसन के नेतृत्व में हिंदू युवा न्यूजीलैंड ने प्राप्त किया, जिसमें HYNZ सबसे आगे रहा है।

युवाओं को उनकी क्षमता तक पहुँचने में मदद करना और गौरवान्वित युवा हिंदू की अगली पीढ़ी का पोषण करना। यह मान्यता हिंदू युवा न्यूजीलैंड के सशक्तिकरण के प्रति समर्पण को रेखांकित करती है। नेतृत्व विकास, साँस्कृतिक शिक्षा और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से युवा, उनके धर्मफेस्ट को समुदाय द्वारा अच्छी तरह से मान्यता प्राप्त और सम्मानित किया जाता है।

न्यूजीलैंड की हिंदू परिषद इसके लिए भारतीय न्यूजलिंक का हार्दिक आभार व्यक्त करती है। हिंदू समुदाय के योगदान को पहचानना। ये पुरस्कार सामूहिकता का प्रतीक हैं। न्यूजीलैंड में संपूर्ण हिंदू समुदाय का प्रयास और समर्पण। यह मान्यता न केवल व्यक्तिगत उपलब्धियों का जश्न मनाता है, लेकिन समुदाय के सामूहिक प्रयास पर भी प्रकाश डालता है। साँस्कृतिक जागरूकता, सामाजिक एकता और सामुदायिक विकास को बढ़ावा देता है।

संघ के प्रचारक, विहिप के पूर्व क्षेत्र संगठन मंत्री,
श्री विजयराव माताडे जी का देहावसान

नागपुर। संघ के प्रचारक तथा विश्व हिंदू परिषद के पूर्व क्षेत्र संगठन मंत्री मा. श्री विजय राव माताडे जी का दिनांक 20 जून, 2024 गुरुवार को सुबह दुःखद निधन हो गया।' 'अंत्य दर्शनों के लिए सुबह 10 से 11 बजे तक विश्व हिंदू परिषद कार्यालय धंतोली, नागपुर में उनके पार्थिव शरीर को रखा गया' तत्पश्चात् 'अंत्य यात्रा' श्री मोहन माताडे जी, श्रीराम फर्नीचर, झंडा चौक, महाल के घर से दोपहर 3 बजे निकलकर गंगा बाई घाट पर अन्त्य संस्कार हुआ।

दिवंगत आत्मा के प्रति विश्व हिन्दू परिषद एवं ''हिन्दू विश्व'' पाक्षिक पत्रिका की अश्रुपूरित विनम्र श्रद्धाँजलि !

धर्मांतरण पर चिंतित क्यों हुआ इलाहाबाद हाईकोर्ट, कोर्ट ने बहुसँख्यक आबादी के लिए क्या खतरा बताया?

प्रयागराज। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने धर्मांतरण को लेकर अहम टिप्पणी की है। हाईकोर्ट ने कहा है कि उत्तर प्रदेश में एससी/एसटी और आर्थिक रूप से कमजोर लोगों का ईसाई धर्म में अवैध धर्मांतरण बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। इसे तत्काल रोका जाना चाहिए। इसके साथ ही अदालत ने यह भी कहा कि लालच देकर धर्म बदलने का खेल जारी रहा, तो देश की बहुसँख्यक आबादी एक दिन अल्पसँख्यक बन जाएगी।

आखिर मामला क्या था?

जिस मामले पर इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने टिप्पणी की है, वह उत्तर प्रदेश के हमीरपुर का है। एफआईआर में हमीरपुर निवासी शिकायतकर्ता रामकली प्रजापति के भाई रामफल को आरोपी कैलाश हमीरपुर से दिल्ली में आयोजित सामाजिक समारोह में भाग लेने के लिए ले गया था। मौदहा गाँव के कई अन्य लोगों को भी सामाजिक समारोह में ले जाया गया और उनका धर्म परिवर्तन कर उन्हें ईसाई बना दिया गया। आरोपी कैलाश ने शिकायतकर्ता से वादा किया था कि उसके मानसिक रूप से बीमार भाई का इलाज कराया जाएगा और एक सप्ताह के भीतर उसे उसके पैतृक गाँव वापस भेज दिया जाएगा। जब शिकायतकर्ता रामकली का भाई एक सप्ताह के बाद वापस नहीं लौटा, तो उसने आरोपी कैलाश से पूछा कि उसका भाई वापस नहीं आया है। इसका उसे कोई संतोषजनक जवाब नहीं मिला।

आरोपी के वकील ने अदालत के सामने तर्क दिया कि शिकायतकर्ता के भाई रामफल का धर्म परिवर्तन नहीं हुआ था, न ही वह ईसाई है। वह कई अन्य व्यक्तियों के साथ ईसाई धर्म और कल्याण समारोह में शामिल हुआ था। उन्होंने आगे कहा कि जांच के दौरान पुलिस ने विभिन्न व्यक्तियों के बयान दर्ज किए थे, जिस पर इस स्तर पर भरोसा नहीं किया जा सकता है कि आरोपी कैलाश की कोई भूमिका नहीं है। सोनू पास्टर ही ऐसी सभा कर रहा था और उसे पहले ही जमानत पर रिहा किया जा चुका है।

धर्मांतरण कराने वालों को दिया जा रहा है भारी मात्रा में पैसा

राज्य की ओर से पेश अतिरिक्त महाधिवक्ता ने दलील दी कि ऐसी सभा आयोजित करके इन लोगों द्वारा बड़ी सँख्या में लोगों को ईसाई बनाया जा रहा है, जिन्हें भारी मात्रा में पैसा मुहैया कराया जा रहा है। इसके अलावा उन्होंने न्यायालय के सामने गवाहों के विभिन्न बयानों का भी हवाला दिया, जिसमें कहा गया है कि आरोपी कैलाश लोगों को ईसाई धर्म में परिवर्तित करने के लिए गाँव से ले जा रहा था और इस कार्य के लिए उसे भारी मात्रा में धन दिया जा रहा था। न्यायमूर्ति रोहित रंजन अग्रवाल ने मामले से जुड़े पक्षों के अधिवक्ताओं को सुना और रिकॉर्ड पर मौजूद सामग्री का अवलोकन किया। इसके उपरांत अपने फैसले में न्यायमूर्ति रोहित ने अपने फैसले में कहा कि भारत के संविधान का अनुच्छेद 25 अंतःकरण की स्वतंत्रता और धर्म को स्वतंत्र रूप से मानने, अभ्यास और प्रचार का प्रावधान करता है, लेकिन यह एक धर्म से दूसरे धर्म में धर्मांतरण का प्रावधान नहीं करता है।

आरोपी के खिलाफ गंभीर आरोप लगे

फैसले में कहा गया कि 'प्रचार' शब्द का अर्थ है बढ़ावा देना, लेकिन इसका मतलब किसी व्यक्ति को उसके धर्म से दूसरे धर्म में परिवर्तित करना नहीं है। इस मामले में आरोपी के खिलाफ मुखबिर ने गंभीर आरोप लगाए हैं कि उसके भाई को गाँव से दूर दिल्ली में आयोजित कल्याण सभा में भाग लेने के लिए ले जाया गया था और उसके साथ गाँव के कई लोगों को भी वहाँ ले जाया गया था और उन्हें ईसाई बनाया जा रहा था। मुखबिर का भाई कभी गाँव वापस नहीं लौटा। अदालत ने कहा कि कई अन्य व्यक्तियों के दर्ज किए गए बयानों से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि आरोपी कैलाश लोगों को दिल्ली में आयोजित धार्मिक सभा में भाग लेने के लिए ले जा रहा था, जहाँ उन्हें ईसाई बनाया जा रहा था।

यह नहीं रुका तो भारत की बहुसँख्यक आबादी एक दिन अल्पसँख्यक हो जाएगी – अदालत

मामले में गंभीर टिप्पणी करते हुए अदालत ने कहा कि यदि इस प्रक्रिया को जारी रहने दिया गया, तो इस देश की बहुसँख्यक आबादी एक दिन अल्पसँख्यक हो जाएगी। इसके साथ ही कहा गया कि ऐसे धार्मिक समागमों को तुरंत रोका जाना चाहिए, जहाँ धर्मांतरण हो रहा है और भारत के नागरिकों का धर्म परिवर्तन हो रहा है।

न्यायमूर्ति रोहित ने कहा कि यह भारतीय संविधान के अनुच्छेद 25 के संवैधानिक आदेश के विरुद्ध है। यह धर्म परिवर्तन का प्रावधान नहीं करता है, बल्कि केवल अंतःकरण की स्वतंत्रता और धर्म को स्वतंत्र रूप से मानने, अभ्यास और प्रचार का प्रावधान करता है।

बड़े पैमाने पर हो रहीं धर्मांतरण की गैरकानूनी गतिविधियाँ : न्यायालय

न्यायालय ने कहा कि उसके संज्ञान में कई मामलों में यह बात आई है कि उत्तर प्रदेश में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति और आर्थिक रूप से गरीब व्यक्तियों सहित अन्य जातियों के लोगों का ईसाई धर्म में धर्मांतरण करने की गैरकानूनी गतिविधि बड़े पैमाने पर की

जा रही है। न्यायालय ने कहा कि उसने प्रथम दृष्टया पाया है कि आरोपी जमानत के लिए हकदार नहीं है। इसलिए, इस मामले में शामिल आरोपी की जमानत याचिका को खारिज कर दिया जाता है।

विश्व हिन्दू परिषद के सेवा प्रकल्प अशोक सिंघल सेवा धाम

'वात्सल्य वाटिका' मे मनाया गया अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

बहादराबाद, 21 जून। पतित पावनी माँ गंगा के पावन तट पर स्थित अशोक सिंघल सेवा धाम 'वात्सल्य वाटिका' के प्रांगण में 'अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस' के अवसर पर योग का भव्य आयोजन किया गया। माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्जवलन कर कार्यक्रम का आयोजन प्रारम्भ किया गया। प्रधानाचार्य उदयराज सिंह चौहान ने समस्त अतिथियों सहित सभी महानुभवों का स्वागत किया एवं सूक्ष्म परिचय कराया।

योगाचार्य प्रिया ज्योति एवं अनिल नौटियाल ने योग कराकर योग का कार्यक्रम सम्पन्न कराने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। उन्होंने कार्यक्रम में योग, आसन व प्राणायाम कराए। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि नीता नय्यर ने योग को भारतीय सँस्कृति की देन बताया और सभी बच्चों सहित योग दिवस की शुभकामनाएँ दी। वात्सल्य वाटिका के प्रबंधक प्रदीप मिश्रा ने योग को जीवन का आधार मानते हुए पहला सुख निरोगी काया का भाव व्यक्त किया और वात्सल्य वाटिका के बच्चों को आशीर्वाद प्रदान किया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में सी.एम.आर. ग्रीन कंपनी के प्लांट हेड महेश कुमार त्यागी, एच. आर. ऋषि तिवारी उपस्थित रहे, जिनके द्वारा वात्सल्य वटिका के बालकों को योगा चटाई भेंट की गई। राष्ट्रीय गीत के माध्यम से कार्यक्रम का समापन हुआ। योग कार्यक्रम में नरेश वर्मा, विमलेश गौड़ के साथ वात्सल्य वाटिका परिवार के समस्त सदस्य एवं अनेकानेक महानुभाव उपस्थित रहे, जिन्होंने योग का सम्पूर्ण लाभ प्राप्त किया।

नई दिल्ली में हैदराबाद के सांसद असदुद्दीन ओवैसी द्वारा संसद के भीतर जय फिलस्तीन के नारे लगाने के विरोध में जंतर मंतर पर विरोध प्रदर्शन करते विहिप–बजरंग दल के पदाधिकारी, पूज्य संत व कार्यकर्त्ता

हरिद्वार। विहिप के सेवा प्रकल्प अशोक सिंघल सेवा धाम 'वात्सल्य वाटिका' मे मनाया गया अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

न्यूजीलैंड। हिंदू काउंसिल ऑफ न्यूजीलैंड और हिंदू यूथ न्यूजीलैंड के दसवें वार्षिक इंडियन न्यूजलिंक स्पोर्ट्स में उनके उत्कृष्टयोगदान के लिए सम्मानित किया गया।

अशोकनगर में विश्व हिंदू परिषद द्वारा सर्व समाज प्रतिभा सम्मान कार्यक्रम में उपस्थित विहिप केन्द्रीय सहमंत्री श्री अरुण नेटके, प्रांत के पदाधिकारी व सर्वसमाज के बन्धु/भगिनी

पाटण (गुजरात) में आयोजित राजमाता नायिकी देवी गौरव दिन समारोह में गुजरात के मुख्यमंत्री माननीय भूपेन्द्र भाई पटेल और विहिप के सह संगठन महामंत्री विनायकराव देशपाण्डे

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6
email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/24-26
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि : 13.07.2024
प्रेषण तिथि : 14-15 (अग्रिम-पाक्षिक)

LPS BOSSARD
Proven Productivity

PRODUCT SOLUTIONS

Whether a suitable standard solution or a customized component - fastening technology must be matched with a specific customer need. At LPS Bossard we have a solution to your every fastening challenge.

APPLICATION ENGINEERING

Product designers and production engineers all face a maze of challenges when designing and building their products. Making the right choice of fastening solution speeds up assembly and reduces life cycle costs. The application engineers at LPS Bossard have the expertise to help make that critical decision.

SMART FACTORY LOGISTICS

Smart Factory Logistics is an end-to-end service for managing your B- and C-parts. It is a time-tested and proven methodology that helps to leverage hidden potential for productivity improvement.

Rajesh Jain
M.D., LPS Bossard Pvt. Ltd.
Trustee, Vishva Hindu Parishad

LPS Bossard Pvt. Ltd.
NH-10, Delhi-Rohtak Road
Kharawar Bye Pass
Rohtak-124001 (INDIA)
T +91 1262 305164-198
F +91 1262 305111,112
india@lpsboi.com
www.bossard.com

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी–82, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस–1, नई दिल्ली–110020 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी